ज्योतिष ग्रन्थ की अपूर्व माया

भृगु-प्रश्नावली

(मन की सभी चिन्ताओं को दूर करने के लिए)

ज्योतिष सम्बन्धी हर प्रकार के प्रश्न और उनके उत्तर इस पुस्तक में दिए हैं। ज्योतिषी और ज्योतिष सीखने वालों के लिए अनुपम पुस्तक है।

लेखक—
रघुनाथसिंह "अकेला"

प्रकाशक—भवानीशंकर ज्योतिष कार्यालय, हाथरस

मुद्रक—वेंकटेश्वर मुद्रणालय हाथरस

[मूल्य १०)

१९८७]

प्रश्न और उसका उत्तर

विधिः—प्रश्न बताने वाले ज्योतिषीं को चाहिए कि नीचे के १५ प्रश्नों को प्रश्न पूछने वाले आगन्तुक को दिखा कर यह कहे कि आपका जो प्रश्न हो उसे अपने मन में ही रखो। परन्तु यह प्रश्न जो लिखे है उनमें यह देखो कि आपका प्रश्न इसके अन्दर लिखा है या नहीं। जब प्रश्न करता प्रश्नों को देखकर यह कहे कि हां इनमें हमारा प्रश्न लिखा है, तव ज्योतिषो कहे कि अब आप इन प्रश्नों में जो आपका है उस के आगे लिखी गिनती को याद करलो। जव वह कहे कि याद करली हैं, आप फिर आगे लिखे नम्बरों के चार्ट को दिखा कर प्रश्न करता से कहो कि इन चार्टों में आपके प्रश्न की–संख्या जिस जिस में हो उसी चार्ट पर उंगली रखकर वताओ कि किस–किस चार्ट में आपके प्रश्न का नम्वर मौजूद हैं। जव वह वतादे कि इनें में/तव ज्योतिषी को चाहिए कि चार्टों पर ऊपर सीरियल नम्वर वाली संख्याओं को अपने मन ही मन में जोड़ लेवें फिर जो संख्या का जोड़ लगे उसी नम्बर के पहले प्रश्न चार्ट में देखे तो पता चल जायगा कि पूछने वाले आगन्तुक का प्रश्न क्या है। तव आये प्रश्न चक्रों में जो प्रश्न चक्र उक्त पूछने वाले के प्रश्न से सम्वन्धित हो उसमें पूछने वाले ही व्यक्त से इष्टदेव का स्मरण करवाकर चक्र में उंगली रख वाले। तब जिक अङ्क या अक्षर पर उंगली रखे उसी के आगे लिखे को पढ़कर वताये। भगवान की कृपा से उस प्रश्नावली का प्रश्नोतर लगभग ठीक ही वैठेगा।

आगे उदाहरण के लिए जानने को समझाया गया है।
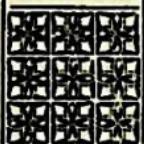
प्रश्न चार्ट

१—रोग परीक्षा प्रश्न ।
२—विवाद परीक्षा प्रश्न ।
३—सन्तान परीक्षा प्रश्न ।
४—रोजगार परीक्षा प्रश्न ।
५—बन्दी मुक्ति परीक्षा प्रश्न ।
६—गमन परीक्षा प्रश्न ।
७—नष्ट द्रव्य परीक्षा प्रश्न ।
८—व्यापार परीक्षा प्रश्न ।
९—विद्या परीक्षा प्रश्न ।
१०—सम्बन्ध परीक्षा प्रश्न ।
११—विवाह परीक्षा प्रश्न ।
१२—चोरी परीक्षा प्रश्न ।
१३—मनोकामना पूर्ति परीक्षा प्रश्न ।
१४—गर्भ परीक्षा प्रश्न ।
१५—शत्रु नाश परीक्षा प्रश्न ।

नोट—पहिले प्रश्न कर्ता से इन प्रश्नों को दिखाकर कहे कि तुमहारा प्रश्न इनमें है या नहीं, जब वह कहे कि इसमें प्रश्न है तब उससे कहे कि अब अपने प्रश्न के आगे लिखकर स्मरण करले ।

चक्र नं० १

चक्र नं. २
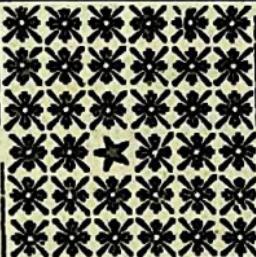
चक्र नं. ३

चक्र नं. ४

८	९	१०	११
१५	१४	१३	१२

अतः फिर अब उपरोक्त बने चार चक्रों में प्रश्न कर्ता को दिखा कर यह पूछे कि तुम्हारे प्रश्न का नम्बर इन चारों चक्रों में से किन किन चक्रों में है। जब वह जिन-जिन चक्रो में बताये उन्हीं का चक्र नम्बर जोड़कर प्रश्न जाने। फिर उसी प्रश्न के चक्र में उंगली रखवा कर उत्तर बतावे। अथवा आगे दिये एक से पन्द्रह नम्बर तक के चक्र हैं उन में जो प्रश्न का अंक उसका है उसी नम्बर के चक्र में उंगली रख वाये फिर उसी के नम्बर या अक्षर वाले उत्तर को कहे।

उदाहरण न. १

मान लो कि प्रश्न कर्त्ता ने अपने मन में सोचा है कि रोग कब तक दूर होगा। अब समझलो कि आपने प्रश्न चार्ट पूछने वाले के सामने रखा तो उसने अपना नम्बर १ याद किया क्योकि प्रश्न का नम्बर एक ही दिया है। फिर आप उसके सामने चारों प्रश्न चकों को रखिए और कहिए कि जिस-जिस में उसके प्रश्न का नम्बर हो उस-उस प्रश्न चक्र को बताये कि किस-किस में उसका नम्बर है। तब वह पहले नम्बर के प्रश्न चक्र को ही बतायेगा क्योंकि १ नम्बर केवल पहले नम्बर वाले प्रश्न चक्र में ही हैं और तीनों में नहीं है। तब आप प्रश्न चक का नम्बर देखो तो १ नम्बर ही हैं तो परीक्षा प्रश्न चक्र १ में उ.गली रखवाइये। मानलो फिर प्रश्न पूछने वाले ने परीक्षा प्रश्न चक्र में ऐ पर उंगली रखी हैं तो ऐ के सामने लिखे उत्तर को कहे—

ऐ के सामने का उत्तर, हे प्र० कर्ता, आपका रोग सम्वन्धी प्र० है। सो काम विकार उत्पन्न होने से नाड़ी की गति अन्तर करती है सो शीघ्र ठीक हो जाओगे।

दूसरा उदाहरण

मानलो चार्ट प्र० में प्र० कर्ता ने अपना नम्वर मालूम करके चक्र नम्वर में पहिले और दूसरे चक्र में प्र० का नम्वर होना वताया है तो अव पहिले और दूसरे चक्र के नम्वर १+२ को जोड़ो तो वनता है इसका परीक्षा प्र० चक्र ३ में उंगली रखवाओ/मानो उसने 'ख' पर उंगली रखी है तो उत्तर यह हुआ कि प्र० सन्तान से संवन्धित है उत्तर यह है कि आपके सन्तान होगी लेकिन कुछ देरी हैं ईशवर को इच्छा ही ऐसी है।

तीसरा उदाहण

यदि पहले दूसरे चौथे में तीनों प्र० न० होना वताया है तो ७ न० वना/क्यों कि२+१+३=७ हुआ अतः सातवे प्र० परीक्षा चक्र में उंगली रखवाकर प्र० का उत्तर।

चौथा उदाहरण

यदि पहले, दूसरे चौथे आठवे चारों में प्र० अक है तो १+२+ +८=१५ बना तो वे प्रशनोत्तर चक में उंगली रखवाकर प्र० का उत्तर दे।

विषय-सूची

रोग परीक्षा प्रश्न १

उ	ऊ	ख	ट	औ
अ	ऊ	गं	अ	अ
च	छ	ए	ज	झ
ट	अः	घ	ऐ	ट
क	ठ	ड़	अ	ओ

उ—आपको यह रोग पिता के विचार के कारण उत्पन्न हुअ हैं। शीघ्र ही ठीक हो जाओगे ।

उ—आपका यह रोग पित्त के बिकार के कारण वशानुसार रक्त से उत्पन्न हुआ है, जलदी ही ठीक हो जाओगे ।

ए—अपनी नाड़ी में पित्त का विकार बना रहता है इस कारण रोग लगा है, चिन्ता न करो ठीक हो जाओगे।

ऐ—काम का बिकार उत्पन्न होने से नाड़ी की गति अन्तर करती है सो ठीक हो जाओगे।

ओ—आपको गरमी का विकार है शीघ्र ही दूर होगा, चिन्ता मत करो।

औ—उपकार करने से अर्थात् पुन्य करने से भला होगा, आपको मनोव्याधि रोग है।

अ कफ विकार से कष्ट है चिकित्सा कीजिये, ईशवर ने चाहा तो शीघ्र ही आराम हो जायगा ।

अः—आपको वात, कफ से जो व्याधि उत्पन्न हुई है वह शीघ्र ही दूर हो जायगी।

क—आपको यह रोग अभी पीछे दिन से ही हुआ है, चिन्ता न करो इलाज करो ठीक होगे।

ख—आपको यह रोग पेट की खरावी के कारण हुआ हैं सो उपचार करने से दूर होगा।

ग—भूत पिशाच का चक्कर छोड़ कर वीमारी का इलाज करो, तभी ठीक होगे ।

घ—अपको भ्रम है कि कोई भूत हैं परन्तु यह सव वीमारी है सो इलाज करने से ठीक होगी ।

ङ—यह रोग इड़ा नाम नारी से हुआ है सो यह इलाज करने से दूर होगा ।

च—इलाज कराये शीघ्र वीमारी दूर हो जावगी यह रोग वात पित्त की गड़वड से हुआ है ।

छ—वात कफ की गड़बड से रोग हुआ है, उपचार कराने से स्वस्थ हो जायगी ।

ज—यह वीमारी धातु के कारण हुई हैं सो जल्दी ही ठीक हो जाओगे ।

झ—उदर रोग है उपाय करिए दवा से ही रोग जायगा, खाने पीने का परहेज रखे ।

ञ—भोजन किया करो, टहलने जाया करो, रोग दूर होगा ।

ट—आपको जो रोग है वह ठीक तो अवश्य होगा लेकिन देर से होगा ।

ठ—यह रोग ला इलाज है फिर भी कोशिश करने से ठीक हो सकता है ।

विवाद परीक्षा प्र. (२)

१	५	१०	१३	१६
२	६	११	१४	१८
१५	३	७	८	१९
१७	१२	४	९	२०

१—हे प्र० करता ! किसी के साथ झगड़ा मत करो ठीक नहीं है ।

२–हे प्र० करने वाले ! सावधान रहो यह व्यक्ति तुमसे अधिक सवल है। अतः इससे झगड़ा करना तुम्हारे लिए शुभ नहीं हैं।

३–हे प्र० करता ! इस व्यक्ति से विरोध करना तुम्हारे लिए हानि कारक हैं।

४–हे प्र० पूछने वाले ! यह व्यक्ति तुमसे हर प्रकार बलिष्ट है अतः उससे विरोध करने में हानि है।

५–हे प्र० पूछने वाले ! सावधान रहो इस समय इससे विवाद करने में तुम्हारी हार है।

६– हे प्र० कर्ता ! सावधान रहने में तुम्हारी भलाई है झगड़ा करना हानिकारक है।

७–हे प्र० करने वाले ! झगड़ा करने में लाभ नहीं है।

८–हे प्र० कर्ता ! विवाद में विजय पाओगे।

९–हे प्र० पूछने वाले ! इस विवाद में विजय सम्भव दिखाई पड़ती है।

१०–हे प्र० करने वाले ! विवाद में लाभ होगा परन्तु कुछ समय वाद ही विवाद करें।

११–हे प्र० क़र्ता ! झगड़ा न करके मीठा बनकर समस्या को सुलझाना, झगड़े से अधिक लाभदायक रहेगा।

१२–जिससे तुम्हारा विवाद है वह स्वयं कमजोर है, तुम बल–वान हो अतः लाभ होगा।

१३–हे प्र० कर्ता ! यदि लाभ चाहते हो तो इस समय विवाद मत करो।

१४–हे प्र० पूछने वाले ! इस समय विवाद करने में तुम्हारी जीत है।

१५–हे प्र० करने वाले ! प्रश्न का उत्तर यही है कि विवाद से दूर रहना ही लाभप्रद है।

१६–हे प्र० कर्ता ! इस समय को चुकाकर फिर किसी समय विवाद करने में लाभ है।

१७–हे प्र० कर्ता ! लाभ करना है तो इस समय विवाद का विचार त्याग दो।

१८–हे प्र० करने वाले ! प्रश्न का उत्तर विवाद न करने से ठीक है।

१९–हे प्र० पूछने वाले ! विवाद में जीत है।

२०–हे प्र० कर्ता ! विवाद में जीत होगी।

सन्तान परीक्षा प्रश्न (३)

क	ण	छ	ढ	न	च
त	ख	ज़	ड	ड़	न
छ	ज	ग	ध	झ	अ
ढ	ड	ग	घ	ठ	ट
थ	ख	झ	ठ	ड़	न
क्ष	द	अ	ट	ध	च

क—ईश्वर की लीला अपार है, आपको सन्तान तो प्राप्त होगी परन्तु देर से होगी।

ख—आपके सन्तान होगी परन्तु कुछ देरी है, ईश्वर की इच्छा ही ऐसी है।

ग—आपको सन्तान प्राप्त होगी परन्तु योग ऐसा है कि कन्या प्राप्त होगी।

घ—कन्या प्राप्ती का योग है, सन्तान मिलेगी परन्तु देर से प्राप्त होगी।

ङ.—भगवान का ध्यान, भजन करो आपको सन्तान तो मिलेगी परन्तु बहुत यत्न करने से पुत्र उत्पन्न होगा।

च–कुछ समय के पश्चात् पुत्र उत्पन्न होगा भगवान शङ्कर का ध्यान करो।

छ–भगवान का भजन करो, कुछ दिन बाद सन्तान होगी। पुत्र उत्पन्न होगा।

ज–पुत्र प्राप्त होगा चिन्ता मत करो। खुशी से घर भर जायगा

झ–घर में खुशी होगी यत्न करने से पुत्र उत्पन्न होगा।

ञ–तुम्हारे घर में शीघ्र ही कन्या उत्पन्न होगी, यह कन्या बहुत भाग्यशाली होगी।

ट–कन्या होने का योग है परन्तु भगवान की लीला विचित्र है सन्तान अवश्य होगी।

ठ–आपके घर में सुन्दर बालक का जन्म होगा, चिन्ता दूर होगी चिन्ता मत करो।

ड–आपके घर में खुब सूरत भाग्यवान बालक का जन्म होगा। घर मे खुशी होगी।

ढ़–आपके यहाँ कन्या सन्तान उत्पन्न होगी ऐसा योग पाया जाता है।

ण–आपके घर मे तीन सुन्दर संताने प्राप्त होंगी ऐसा योग जाना जाता है।

त–अभी आपके भाग्य में सन्तान का योग नहीं है, चिंता मत करो, कार्य पूर्ति देर से होगी

थ–आपके सुन्दर बालक प्राप्त होगा ऐसा जाना जाता है।

द–आपको पुत्र प्राप्त का योग है ऐसा जाना जाता है परन्तु अभी कुछ देर हैं।

ध–अभी आपको सन्तान होना सुख नहीं हैं सो चिंता मत करो

न–सन्तान होगी अवश्य होगी चिता मत करो, कुछ इष्ट का पूजन किया करो।

रोजगार विचार प्र. ४

क	झ	ढ	ड
ज	ख	ञ	ठ
ण	छ	ग	ट
त	न	च	घ
थ	द	ध	ङ

क—हे प्र० करने वाले ! तुम्हांरे दिल में रोजगार की जो इच्छा हैं वह कोशिश करने से पूरा होगी।

ख—हे प्र० पूछने वाले ! जो प्र० रोजगार का विचारा है वह ठीक है परन्तु देर से पूरा होगा, ऊधम करने से सफलता शीघ्र मिलेगी।

ग—हे प्र० करने वाले ! तुम्हारा रोजगार कुछ समय बाद लगेगा भगवान का स्मरण किया करो।

घ—हे प्र० कर्त्ता ! अच्छे दिन आने वाले हैं भगवान का भजन करो। रोजगार मिलेगा।

ड—हे प्र० कर्त्ता ! भाग्य अचछा हैं रोजगार भी शीघ्र मिलेगा।

च—हे प्र० पूछने वाले ! रोजगार शीघ्र लग जाएगा परन्तु गणेशजी का भजन किया करो।

छ—हे प्र० करने वाले ! तुम्हारा रोजगार लगेगा लेकिन कुछ देर लगेगी।

ज—हे प्र० कर्त्ता ! तुम्हारा मन रोजगार की चिन्ता में है सो जल्दी लगेगा।

झ—हे प्र० करने वाले ! रोजगार लगेगा परन्तु अभी देर हैं।

ञ—हे प्र० पूछने वाले ! तुम्हारा रोजगार वहुत अच्छा लगने वाला है।

ट—हे प्र० कर्त्ता! चिन्ता मत करो रोजगार चलने ही वाला है।

ठ—हे प्रश्न करने वाले ! फिकर छोड़ दो रोजगार शीघ्र ही लगने वाला हैं ।

ड—हे प्र० पूछने वाले ! शिवजी का भजन किया करो। रोजगार जल्दी लग जाएगा ।

ढ—हे प्र० करने वाले ! रोजगार अच्छा लगेगा । परन्तु कुछ विलम्ब लगेगा ।

ण—हे प्र० करने वाले ! रोजगार लगने में अभी कुछ देर है ।

त—हे प्र० पूछने वाले ! तुम्हारा रोजगार परदेश में लगेगा ।

थ—हे प्र० कर्त्ता ! रोजगार घर छोड़ने पर बाहर लगेगा ।

द—हे प्र० करने वाले ! तुम्हारा रोजगार होकर बिगड़ गया है फिर बनेगा ।

ध—हे प्र० पूछने वाले ! अभी रोजगार नहीं लगेगा कुछ नुकसान होगा ।

न—हे प्र० कर्त्ता ! रोजगार बनने वाला है चिन्ता मत करो ।

बन्दी मुक्ति का प्रश्न (५)

१	२	११	२०	१५
१७	७	३	४	१२
१९	१२	८	९	१
६	१६	१८	१४	१०

१—हे प्र० करने वाले ! वह प्राणी जो बन्दी हैं जल्दी ही मुक्त हो जाएगा ।

२—हे प्र० करने वाले ! जल्दी में वह जीव बन्दी से मुक्ति हो जाएगा ।

३—हे प्रश्न करने वाले ! अनायास ही वह मनुष्य बन्धन से छूट जायगा ।

४. अकस्मात् ही बाद से वह जीव छूट जाएगा।
५. वह जीव बन्धन से छूटेगा परन्तु अभी कुछ देर लगेगी।
६. उस जीव के बन्धन से छूटने में देर लगेगी।
७. वह प्राणी बन्धि से बड़ा कठिनता से छूटेगा।
८. जो जीव बन्दी है उसके छूटने में बड़ी कठिनाई होगी तब छूटेगा।
९. कुछ विलम्ब से वह बन्दो छूटेगा।
१०. बन्दी के छूटने में समय लगेगा घबड़ाओ मत।
११. प्रश्न अच्छा नहीं है जिसकी आशा है वह अभी छूटने में देरी है।
१२. प्रश्न ठीक नहीं है जो बन्दी है वह कोशिश करने से छूटेगा
१३. चिन्ता मत करो तुम्हारा जीव शीघ्र ही बन्धन से मुक्त हो जाएगा।
१४. जो प्राणी बन्दी है वह छूटेगा।
१५. चिन्ता करने से लाभ न होगा, यत्न करने से ही काम बनेगा पैसा भी अधिक खर्च होगा।
१६. इस जीव का बन्धन अधिक कष्ट भोगने के बाद छूटेगा।
१७. शंका ग्रस्त प्रश्न है, खर्च करने और कष्ट भोगने के पश्चात् ही यह जीव बन्धन से छुटकारा पायेगा।
१८. जिस जीव के विषय में सोचा है वह छूटेगा परन्तु कष्ट पाने तथा व्यय करने पर छूटेगा।
१९. प्रश्न ठीक नहीं है, जीव का बन्धन नहीं छूटेगा छूटने में देर होगी।
२०. किसी तरह भी समय से पहिले बन्धन नहीं छूटेगा, व्यय भी होगा और कष्ट भी होगा।

———

गमन विचार प्रश्न (६)

१	८	१५	१२	५
१७	२	९	६	१८
१९	१३	३	१०	१६
१४	७	२०	४	१

१—तुम्हारे मन में दक्षिण दिशा की ओर जाने का विचार सो जाना उचित ही होगा।

२—तुम्हारी निकट देश में जाने की इच्छा है सो तुम शीघ्र ही जाओगे।

३—भगवान ने चाहा तो आपका कार्य सिद्ध होगा। तुम उत्तर दिशा को यात्रा करो।

४—प्रश्न अच्छा है, उत्तर दिशा में मत जाना अन्य दिशा में जाने पर लाभ होगा।

५—कार्य सिद्ध होगा, दक्षिण दिशा को प्रस्थान करना।

६—कार्य सिद्ध होगा, पूर्व दिशा को प्रथम गमन करना।

७—पश्चिम दिशा को गमन करने से लाभ होगा।

८—पूर्व दिशा में गमन करने से लाभ होगा।

९—समय अच्छा है विचार अनुसार दिशा में गमन करो, लाभ होगा।

१०—निकट की यात्रा लाभदायक होगी।

११—दक्षिण पश्चिम में जाने से लाभ होगा।

१२—कार्य बनेगा लेकिन देर है। जाने से पहिले गणेश पूजन करके अपनी राशि के स्वामी वाले दिन पूर्व या पश्चिम को गमन करना।

१३—उत्तर दिशा को गमन करो तो लाभ होगा।

१४–घर से चलते समय प्रथम पूर्व दिशा को चलो, फिर मन चाही दिशा को जाओ।

१५–पश्चिम में जाओ लाभ होगा।

१६–दक्षिण पूर्व दिशा तुम्हारे लिए लाभकारी रहेगी।

१७–हे प्रश्न करने वाले ! पश्चिम-दक्षिण के कौने वाली दिशा में जाना आपके लिए लाभ देगा।

१८–हे प्र० कर्ता ! तुम्हारा विचार उत्तर दिशा को जाने का है, सो ठीक नहीं रहेगा। अभी कहीं जाना ठीक न होगा।

१९–हे प्र० पूछने वाले ! यदि बाहर जाने का विचार रखते हो तो पूर्व दिशा में जाना।

२०–हे सवाल कर्त्ता ! पश्चिम में जाना लाभदायक है। विशेष-कर गुजरात ठीक रहेगा।

नष्ट द्रव्य परीक्षा प्रश्न (७)

१	१५	८	१७	५
१६	२	९	६	१८
११	१२	३	३	१०
२०	७	१०	४	१९

१—आपकी जो वस्तु खो गई है, वह मिलेगी तो सही लेकिन कष्ट से मिलेगी।

२—जो वस्तु खोई है उसके नष्ट होने का भय है इसलिए पाना कठिन है।

३—तुम्हारा जो द्रव्य मूल सहित गया है सो आपके घर में ही है, मिलेगा।

४—आपका मूल सहित जाने वाला द्रव्य आपके घर में ही मिलना चाहिए।

५—चिन्ता त्याग दो जो द्रव्य खोया है वह शीघ्र ही मिल जायगा।

६—तुम्हारा खोया हुआ द्रव्य जल्दी ही मिल जायगा चिन्ता मत करो।

७—तुम्हारा धातु द्रव्य खोया है सो अवश्य मिलेगा परन्तु बड़ी कठिनता से मिलेगा।

८—तुम्हारा धातु द्रव्य खोया है सो उसका मिलना कठिन है।

९—जो द्रव्य धातु खोया है वह नहीं मिलेगा।

१०—जो द्रव्य धातु खोया है वह मिलना कठिन है यदि मिलेगा भी तो बड़े यत्न करने पर मिलेगा।

११—तुम्हारी खोई हुई वस्तु उत्तार दिशा में गई है।

१२—जो वस्तु खोई है वह पश्चिम दिशा में गई है।

१३—तुम्हारी खोई वस्तु का होना दक्षिण पूर्व दिशा में पाया जाता है।

१४—तुम्हारी खोई वस्तु पूर्व दिशा में मिलेगी।

१५—तुम्हारी खोई वस्तु पश्चिम-दक्षिण में प्राप्त होगी।

१६—जो वस्तु खोई है वह मकान के पश्चिम में मिलेगी।

१७—जो धातु द्रव्य खोया है वह तुम्हारे मित्र के ही पास है।

१८—जो वस्तु खोई है वह देर से मिलेगी।

१९—जो धातु द्रव्य वस्तु खोई है वह तलाश करने से मिल जायगी।

२०—जो वस्तु खोई है वह आपके घर में ही मिल जायगी।

—❀—

व्यापार परिक्षा प्रश्न ८

१	१५	१९	५
१४	६	६	११
१८	३	७	१७
८	१४	१	४
९	१६	२०	१२

१. व्यापार में जब लाभ होगा तब अपने मूल द्रव्य से व्यापार करोगे ।

२. आपको चिन्ता त्याग देनी चाहिये निश्चय ही व्यापार से लाभ होगा ।

३. आपको जीवों (गाय, भैंस, घोड़ा, बकरी, ऊँट) के व्यापार में लाभ होगा ।

४. आपको मूल द्रब्य से व्यापार करने पर लाभ होगा ।

५. व्यापार में लाभ होगा एक चित्त हो कार्य करो ।

६. समय अच्छा है जीवों का व्यापार करो लाभ होगा ।

७. इस समय ग्रह दशा अच्छे नहीं, व्यापार में हानि होगी ।

८. व्यापार मत करो ब्यापार में लाभ नहीं होगा ।

९. तुम ब्यापर मत करो इसमें धन नष्ट होगा ।

१०. समय अच्छा है शत्रु गृह भी मित्र बर्ताव करेंगे । ब्यापार में लाभ होगा ।

११. ब्यापार में लाभ होगा ।

१२. ब्यापार मत करो इस ब्यापार से हानि होगी ।

१३. भला इसी में है कि अन्य काम करो इस व्यापार में लाभ नहीं होगा ।

१४. तुम्हारे इरादे व्यापार करने के हैं परन्तु इस व्यापार में लाभ नहीं है ।

१५. यह मत करो इरादा बदल देने में ही भलाई है।
१६. व्यापार में लाभ होगा परन्तु शुष्क वस्तु का काम करो।
१७. व्यापार करना है तो साझे में मत करना।
१८. व्यापार में निश्चय लाभ होगा एक माह बाद करो।
१९. इस व्यापार मे लाभ कम है।
२०. व्यापार में निश्चय लाभ होगा।

—०—

विद्या प्रश्न विचार ६

प	व	स	ष
ल	फ	ह	श
क्ष	र	ब	त्र
ज्ञ	अ	य	भ
आ	ई	इ	म

प—तुम्हारे भाग्य में बिद्या का योग बहुत है, लेकिन भागवान का स्मरण करते रहा करो।

फ—जो बिद्या सीखोगे वह एक बार सिखाने से ही जल्दी आ जायेगी।

ब—विद्या पढ़ना लाभदायक है, आप बिद्या पढ़ते रहा करो।

भ—विद्या पढ़ना आपके लिए शुभ है, यह आपको विशेष लाभदायक हैं।

म—बहुत परिश्रम करने पर विद्या प्राप्त होगी।

य—जो विद्या पढ़ोगे वह शीघ्र और बहुत कम समय तथा कम परिश्रम से आजायेगी।

र—आप विद्या पढ़िये लाभकारी रहेगी, परन्तु इसका फल आपको देर से मिलेगा।

ल—आपके लिए विद्या पढ़ना अच्छा है, विद्या धन सर्वोपरि धन हैं।

व—आपके भाग्य में विद्या नहीं है, समय नष्ट न करो, अन्य कार्य करो।

स—आपको विद्या अधिक न मिलेगी, जितनी है उसी से सन्तोष करो।

ष—विद्या न आयेगी कोई अन्य काम करो।

श—विद्या पढ़ो आपको भगवान की कृपा से अनेक प्रकार की विद्याओं का ज्ञान होगा।

ह—आपको अनेक प्रकार की विद्या प्राप्त होगी, अतः मन लगा कर विद्या पढ़ो।

क्ष—परिश्रम अधिक करने पर ही विद्या की प्राप्ति हो पायेगी।

त्र—आपके भाग्य में विद्या बहुत कम हैं, यदि विद्या अधिक चाहाते हो तो परिश्रम बहुत करना होगा।

ज्ञ—विद्या भाग्य में नहीं है, फिर भी परिश्रम करने से कुछ विद्या मिलेगी।

अ—विद्या का योग आपके भाग्य में अधिक हैं, परन्तु परिश्रम करने पर।

आ—आपको ऐसा योग है कि विद्या अधिक कष्ट से प्राप्त होगी।

इ—विद्या मिलेगी परन्तु परिश्रम अधिक करना होगा, तभी विद्या मिलेगी।

ई—आपके लिए विद्या धन उत्तम धन सिद्ध होगा।

सम्बन्ध परीक्षा फल–१०

घ	ट	ध	ण	छ	ढ
ठ	ड़	न	त	ड	द
ढ़	ड	च	ठ	थ	ज
ण	च	ट	छ	ग	झ
ख	ञ	ख	थ	ज	ञ
क	त	ध	द	क	झ

क–हे प्र० करने वाले ! यहाँ सम्बन्ध करना अच्छा नहीं है सो अन्य जगह सम्बन्ध करो ।

ख–हे प्र० करने वाले ! यहाँ सम्बन्ध करने में सुख नहीं है

ग–हे प्र० करने वाले ! यहाँ सम्बन्ध मत करो इससे सुख प्राप्त नहीं होगा ।

घ–हे प्र० करने वाले ! इस स्थान पर सम्बन्ध करना हित में नहीं है अन्य सम्बन्ध करो ।

ड–हे प्र० करने वाले ! यह सम्बन्ध अच्छा रहेगा, इसके करने से सुख प्राप्त होगा ।

च–हे प्र० करने वाले ! यह सम्बन्ध सुख प्रदान करने वाला तथा लक्ष्मी बढ़ाने वाला है ।

छ–प्र० करने वाले ! यह सम्बन्ध सब प्रकार से भला है इसे करने से सुख प्राप्त होगा ।

ज—हे प्रश्न करने वाले ! मकान के उत्तर दिशा में सम्बन्ध करना लाभदायक रहेगा ।

झ—हे प्रश्न कर्त्ता ! सम्बन्ध घर से पश्चिम में करना ।

ञ—हे प्रश्न करने वाले ! दक्षिण दिशा को सम्बन्ध करना लाभ देगा सुख मिलेगा ।

ट—हे प्रश्न करने वाले ! पूर्व दिशा मे सम्बन्ध होगा जो लाभ तथा सुख का देने वाला होगा ।

ठ—हे प्रश्न करने वाले ! यदि यह सम्बन्ध करोगे तो सुख न मिलेगा ।

ड—हे प्रश्न करने वाले ! पूर्व दिशा में सम्बन्ध होगा सो अच्छा रहेगा ।

ढ—हे प्रश्न करने वाले ! यह सम्बन्ध त्याग दो उचित नहीं है अन्यत्र करो ।

ण—हे प्रश्न करने वाले ! आपका यह सम्बन्ध सुखकारी है। शीघ्र कर डालो ।

त—हे प्रश्न करने वालो! सम्बन्ध सोच विचार कर करो तो सुखी रहोगे ।

थ—हे प्रश्न करने वाले ! यह सम्बन्ध सुख देने वाला होगा। करो अवश्य करो ।

द—हे प्रश्न करने वाले ! यह सम्बन्ध हितकर है सुख होगा ।

ध—हे प्रश्न करने वाले ! उत्तर या दक्षिण में सम्बन्ध मत करो ।

न—हे प्रश्न करने वाले! पश्चिम में सम्बन्ध करो सुखदायी अवश्य होगा ।

—: ❀ :—

विवाह परीक्षाफल ११

१	९	१३	१	१३	७
११	२	१४	२	८	१२
१७	१८	३	९	१९	२०
५	६	१०	४	७	८
१६	११	१५	३	५	१५
१२	१०	१६	४	१४	६

१—आपका विवाह होगा लेकिन अभी कुछ देरी हैं, समय आने पर चटपट होगा।

२—आपका विवाह देर से होगा, जब होगा वहुत जल्दी होगा जिसमें लाभ होगा।

३—मान प्रतिष्ठा होगी, शादी भी होगी, लाभ भी होगा, सुख भी मिलेगा।

४—उत्तर दिशा से विवाह होगा, चिन्ता मत करो, धैर्य से काम लो।

५—पूर्व दिशा से विवाह होगा, भगवान का स्मरण करो मान प्राप्त होगा।

६—तुम्हारा विवाह पश्चिम दिशा में होगा, जहाँ मान प्रतिष्ठा भी मिलेगी।

७—अभी शादी होने का योग नहीं है, कुछ देर से शादी होगी।

८—आपका विवाह वहुत जल्दी होने वाला है, ऐसा जाना जाता है।

९–आपका विवाह अभी नहीं होगा, कुछ समय और लगेगा तब होगा।

१०–आपका विवाह होगा लेकिन कुछ देर से होने का योग बनता है।

११–आपका अभी विवाह नहीं होगा ऐसा योग जाना जाता है।

१२–आपकी शादी घर से उत्तर दिशा में होगी ऐसा योग जाना जाता है।

१३–शादी होगी कुछ देरी है, बने काम में रोड़े लग जाते हैं, चुगली से सावधान रहें।

१४–आपकी शादी की बात-चीत काफी दिन से चल रही है सो अवश्य होगी।

१५–शादी तो कभी की हो जाती परन्तु चुगलख़ोरों के कारण रुकावट आई है सो अब होगी।

१६–शादी होगी लेकिन होने में कुछ बाधा अवश्य आयेगी।

१७–आपकी शादी अभी नहीं होगी।

१८–आपका विवाह होगा तब अनेक व्याधा होंगी परन्तु कार्य सफल होगा।

१९–आपका विवाह बिना किसी रुकावट के होगा।

२०–आपका विवाह शीघ्र और निर्विघ्न होगा।

–o–

चोरी परीक्षा प्रश्न १२

१	१	८	२	६	१	८	८
६	२	४	५	३	४	७	५
२	३	३	७	७	६	६	२
५	५	७	४	५	३	७	४
८	२	८	४	५	३	८	१
६	१	३	१	१	६	६	४
२	२	४	६	४	८	७	२
१	५	३	७	३	७	५	८

१–चोरी गई वस्तु शीघ्र प्राप्त होगी।

२–खर्च करने पर चोरी गया माल मिलेगा।

३–पूरा पता लगने पर भी चोरी गया माल मिलना कठिन है।

४–चोर पक्का पेशेवन्द है, माल नहीं मिलेगा।

५–किसी दूसरे की सहायता से माल मिलेगा।

६–चोर ने वस्तु को दूसरे को दें दिया है। मिलना कठिन जान पड़ता है।

७–चोरी गये माल में से आधा नष्ट हो गया है, शेष बड़ी कठिनता से मिलेगा।

८–माल नहीं मिलेगा।

मनोकामना प्रश्न १३

१	४	५	६	५	४	१	१
२	२	४	७	६	३	२	२
६	३	३	८	७	२	३	३
७	२	३	४	१	८	२	४
८	१	२	१	५	७	५	५
२	३	४	५	६	६	६	६
१	२	३	४	५	६	७	७
२	२	३	४	५	६	७	८

१–मनोकामना पूर्ण होगी ।
२–इच्छा देर पूरी होगी ।
३–आपकी इच्छा का परिणाम अच्छा नहीं है ।
४–इच्छा पूरी होगी ।
५–भय त्याग दो मनोकामना पूरी होगी ।
६ इच्छा पूरी होने में देर है ।
७–मन की मन में रह जायगी ।
८–इस इच्छा का फल देर से मिलेगा ।

—०—

गर्भ परीक्षा प्रश्न १४

१	२	१	४	५	६	७	८	९	१०
२	२	३	२	१	१०	१	२	९	३
३	३	३	४	५	६	७	८	८	४
४	९	१०	४	१	२	७	३	४	५
५	५	६	७	५	६	८	९	१०	६
६	६	५	४	५	६	३	२	१	७
७	७	८	४	९	१०	७	१	२	८
८	८	३	७	६	५	४	८	३	९
९	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	१०	९	१०	१०	२	३	४	५	१०

१—इस गर्भ से सुख की आज्ञा कम है।
२—गर्भ सुख बहुत कम जान पड़ता है।
३—इस गर्भ से पुत्री का जन्म होगा।
४—इस गर्भ से शुभ लक्षणों वाला पुत्र उत्पन्न होगा।
५—गर्भ से पुत्री होगी आयु कम है।
६—गर्भ अधूरा गिरेगा या बालक की मृत्यु शीघ्र होगी।
७—इस गर्भ से पुत्र जन्म लेगा।
८—इस गर्भ से दीर्घ आयु पुत्र होगा।
९—कन्या का जन्म होगा जोड़ी से होगा।
१०—लड़का लड़की होने का योग है।

शत्रु नाश प्रश्न १५

१	२	५	६	७	८	७	८
३	२	३	४	५	६	१	२
४	१	३	४	५	६	३	४
१	२	७	८	७	८	७	८
५	६	१	२	१	२	५	६
८	७	६	५	३	४	३	४
१	२	१	२	३	४	५	६
७	८	१	२	८	६	६	८

१–हे प्र० करने वाले ! तुम्हारा शत्रु दुष्ट है सो उसका दमन तुम्हारे द्वारा न हो सकेगा।

२–हे प्र० कर्त्ता ! तुम्हारा शत्रु पर विजय पाना जरूरी है।

३–हे प्र० पूछने वाले ! तुम्हें शत्रु द्वारा अधिक हानि होगी।

४–हे प्र० करने वाले ! शत्रु पर मित्र की सहायता से विजय प्राप्त हो ी।

५– डरो मत तुम्हारा शत्रु निर्बल हो गया है।

६–शत्रु का विश्वास मत करो उससे भय है।

७–शत्रु प्रवल है उसका भय राजा की सहायता से ही दूर होगा।

८–धीरज धरो शत्रु से शीघ्र ही सुलह हो जायगी।

नोट– अब आगे अन्य प्रकार के प्रश्नोत्तर चक्रों (काल नामों) का विवरण संग्रह करके दिया है। जिनकी अपनी रीति के अनुसार प्रश्न बताने की बिधियों का वर्णन किया गया है।

रामशलाका प्रश्नोत्तरी

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	ब	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	हिं	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	नु	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	हुं	ह	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हीं	ा	जू
ता	रा	रे	री	ह	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	मु	स	रि	ग	द	न	म	मृ	खि	जि	मनि	त	जं
सिं	मु	न	न	कौ	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ब	ती	न	रि	म
नां	पु	व	अ	ढ़	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	ह	सु	म्ह	रा	र	स	हिं	र	त	न	ख	ा	जा	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	ज	हू	हीं	ष	जू	ई	रा	रे

राम शलाका देखने की विधि

इस राम शलाका प्रश्नोत्तरी द्वारा नौ चौपाइयाँ बानता है जिनके निकालने की विधि तथा उनका फल आगे अंकित किया गया है।

जो प्रश्न करनेंवाला आदमी राम शलाका प्रश्नावली द्वारा अपने मन में बिचारे हुए प्रश्न का उत्तर जानने की जिज्ञासा रखता हो, तो उसे सर्व प्रथम भगवान राम का ध्यान करके उपरोक्त राम शलाका प्रश्नावली में अपनी तर्जनी ऊँगली रखनी चाहिये। जिस अक्षर पर ऊँगली रखी हो, उस अक्षर को एक कागज या स्लेट पर अलग लिखले। बाद में उसी कोष्ट से आगे प्रति नवे कोष्ठक के अक्षर को तब तक लिखता जाय जब तक लौटकर फिर ऊँगली रखे। कोष्टक के अंक नंबर तक आ जावे। इस प्रकार सब निकले अक्षरों को लिखने से एक चौपाई बन जायेगी। वही सवाल करनेवाले के सवाल का उत्तर है। उत्तर नीचे देखकर जानें।

(१) सुनि सिय सत्य अशीष हमारी।
पूजहिं मन कामना तुम्हारी॥

फल—हे सवाल करनेवाले! तेरा सवाल श्रेष्ठ है। जो कार्य सोचा है, वह जरूर सिद्ध होगा।

(२) प्रविश नगर कीजै सब काजा।
हृदय राखि कोशलपुर राजा॥

फल– भगवान् श्रीराम का स्मरण करके कार्य को आरम्भ करो सफलता प्राप्त होगी।

(३) उघरे अन्त न होइ निबाहू ।
कालनेमि जिमि रावण राहू ॥

फल—कार्य में सफलता पाना असम्भव है ।

(४) विधि वश सु जन कुसंगति परहीं ।
फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥

फल · दुर्जनों का साथ त्याग दो, कार्य होने में संदेह है ।

(५) होइ है वही जो राम रचि राखा ।
को करि तरक बढ़ावहिं शाखा ॥

फल—कार्य होना सन्देहयुक्त है, अतः कार्य का होना न होना ईश्वर भरोसे पर छोड़ दो ।

(६) मुद मंगलमय सन्त समाजू ।
जिमि जग जंगम तीरथ राजू ॥

फल - यह फल श्रेष्ठ है, कार्य निर्विघ्न तथा निसन्देह पूरा होगा ।

(७) गरल सुधा रिपु करहिं मिताई ।
गोपद सिन्धु अनल सितलाई ॥

फल - प्रश्न अति उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा ।

(८) बरुन कुबेर सुरेश समीरा ।
रन सनमुख धरि काहुन धीरा ॥

फल-- कार्य की सफलता में बाधा उत्पन्न होगी ।

(९) सुफल मनोरथ होंय तुम्हारे ।
राम लखन सुनि भये सुखारे ॥

फल— प्रश्न अति उत्तम है, कार्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है ।

हिन्दू प्रश्नावली (फाल नामा)

तारा	सुग्रीव	अंगद
लक्ष्मण	सीताजी	रामचन्द्र
केकई	हनुमान	विभीषण
रावण	मेघनाद	कुम्भकरण

यद्यपि यह प्रश्नावली प्राचीन नहीं जान पड़ती है, किन्तु यह देखा गया है कि अपढ़ हिन्दू कहीं-कहीं इसे बहुत मानते हैं और इस पर दृढ़ भरोसा रखते हैं। जिस पुस्तक से यह प्रश्नावली विधि यहाँ संग्रह की है, इस पुस्तक के लेखक ने अपनी पुस्तक में इसके विषय में लिखा है कि यह एक ब्राह्मण के पास था। वह इसे अपनी पुस्तक के अन्दर रखता था। बड़ी कठिनाई से उससे प्राप्त करके मैंने अपनी पुस्तक में जन-लाभार्थ लिखा। यद्यपि इस कथन में सत्यता का आधार कितना है यह कहना कठिन है, फिर भी अनुमान है कि कुछ-न-कुछ विशेषता अवश्य रही होगी।

इस प्रश्न चक्र में त्रेता युग में श्री रामचन्द्र जी के जीवन से सम्बन्धित शक्तिशाली व्यक्तियों के ही नाम का उल्लेख

किया गया है। इन्हीं के कर्म, गुण के अनुसार शुभाशुभ फला-देश वर्णन किया है।

इस प्रश्नावली में प्रश्न देखने की रीति ये है कि सर्वप्रथम प्रश्न किसी अपने इष्टदेव का स्मरण करके अपने प्रश्न को मन में विचार कर चक्र के किसी कोष्ठक में ऊँगली रखे, तब नीचे लिखे अनुसार सवाल का शुभाशुभ फल जाने।

※ उत्तर ※

श्री रामचन्द्र जी कथन–हे प्रश्नकर्त्ता! तेरा सवाल अच्छा है तथा शुभ भी है। तुमने जो इच्छा व्यक्त की है वह मनो-कामना तेरी शीघ्र पूर्ण होगी और जो कार्य विचारा है वह सिद्ध होगा।

विभीषण कथन–हे सवाल करनेवाले! तेरा सवाल शुभ है, सफर करेगा तथा लाभ होगा। कार्य कुछ बिलम्ब से सिद्ध होगा, परन्तु अवश्य होगा।

तारा कथन–हे सवाल पूछनेवाले! सवाल मध्यम है, तुझे शत्रु से भय रहेगा परन्तु सावधान रहने पर शत्रु द्वारा होने वाली हानि से बच सकेगा। रविवार के दिन सामर्थ अनुसार भूखे को अन्न या वस्त्र या नकद धन दान करने से संकट कम होगा।

श्री लक्ष्मण जी कथन–हे सवाल कर्त्ता! सोचा कार्य शीघ्र पूर्ण होगा। जिस कार्य को तू करेगा उसमें तुझे सफलता प्राप्त होगी। जो वस्तु तुझे प्रिय है, वह तुझे मिलेगी। चित्त भी सदा प्रसन्न रहेगा।

केकई कथन–हे सवाल करनेवाले! तेरा सवाल ठीक नहीं

है, अतः इस इच्छा को त्यागने में ही तेरा लाभ है, अन्यथा हानि की विशेष सम्भावना है।

मेघनाद कथन – हे सवाल करनेवाले! तेरी इस मनोकामना से तेरे चरित्र पर लाँच्छन लगेगा, जिससे समाज में अपयश होगा। इस मनोकामना के पूरे होने का स्वप्न न देख, रोजी का उद्यम करो।

यदि फिर भी इस कामना को पूर्ण करने का विचार किया तो हानि उठायेगा। तेरा यह विचार छोड़ने में ही भलाई है। यदि हो सके तो सोमवार के दिन पक्षियों को दाना डाल दिया करो।

श्री सीताजी कथन–हे सवाल कर्त्ता! तेरा विचार अच्छा नहीं जान पड़ता है। यदि इस इच्छा को कार्य रूप में परिणित करेगा तो इच्छा भी पूरी न होगी, साथ ही किसी प्रकार की विपत्ति में भी फँसेगा। सो ऐसा विचार छोड़ देने में ही तेरी भलाई है।

सुग्रीव कथन-हे सवाल करनेवाले! तेरी इच्छा विवाह या अन्य जो भी है वह जल्दी ही पूरी होगी तथा किसी बिछड़े मित्र अथवा भाई से भी जल्दी मुलाकात होगी।

रावण कथन—हे सवाल करनेवाले! तेरा विचार तुझको हानि पहुँचानेवाला है। समय अच्छा नहीं चल रहा है इसलिये ये विचार त्याग दे अन्यथा नुकसान उठायेगा। भलाई इसी में है कि यह विचार बदल दो। हो सके तो रविवार, सोमवार, मंगलवार को भूखों को भोजन खलाओ और यह भी न हो सके सात अन्न मिलाकर शाम को बिना टोके किसी तिराहे या चौराहे पर अपने ऊपर उतारकर तीन मुट्ठी रखे।

हनुमानजी कथन-हे सवाली ! तेरा सवाल शुभाशुभ फल देनेंवाला है। तेरी मनोकामना शीघ्र ही और स्वयं ही पूरी हो जायेगी। यदि विवाह की इच्छा है तो इस शुभ कार्य में बिलम्ब मत कर।

अंगद कथन-हे सवाल करनेवाले ! यह सवाल शुभ है। शुभ घड़ी आ गई है, तेरी मनोकामना पूर्ण होगी। तेरा धन, बल, कुटुम्ब सभी समय पर बढ़ेगा।

कुम्भकरण कथन-हे सवाल पूछनेवाले ! जो सवाल तूनें सोचा है, वह शुभ नहीं है। इस कार्य के करनें में विशेष हानि होगी। तेरे ऊपर निराशा के गहन बादल छाये हुए हैं। चित्त को एकाग्र करके भगवान का स्मरण किया करो। जो विपत्ति आनेवाली है, वह शीघ्रता से कम होगी। बने तो पक्षियों को दाना डाला करो।

❋ ज्ञान चन्द्रोदय प्रश्नावली विधि ❋

यहाँ हम जन-लाभार्थ इसका वर्णन करते हैं—

प्रश्न देखने की विधि - जो कोई व्यक्ति पण्डित के निकट आवे, उस आदमी से उन अंकों पर जो यंत्र में लिखे हुए हैं, यह कहकर ऊँगली रखाये कि— हे शिवजी महाराज ! यदि इस आदमी का काम सिद्ध होनेवाला है तो अच्छे अंक पर ऊँगली रखाना।

❋ ऊँगली रखनें का चक्र यंत्र ❋

५	४	३	२
६	७	८	९
१५	[illegible]	१३	१०
१६	१७	१८	१९

प्रश्नों के शुभाशुभ फल

फल अंक १

हे सवाल करनेंवाले ! जो काम तूने अपने दिल में सोचा है बहुत शीघ्र परमेश्वर सिद्ध करेगा और कुछ रुपया भी हाथ लगेगा। रोजगार भी किसी के बसीले से लगेगा और मतलब तुम्हारा सब पूरा होगा। अगर भरोसा नहीं है तो देखलो आपके तिल है। यदि बन सके तो भैरोंजी का पूजन करो और शनिवार के दिन काले कुत्ते को पेड़ा खिलाओ।

फल अंक २

अहो सवाली ! काम तुम्हारा सिद्ध होगा। अब बुरे दिन जाते रहे और ठीक दिन आये हैं। भादों के महीनें से खुशी हासिल होगी और घर में भी कुछ आशा होगी। थोड़े दिन में रोजगार भी होगा। तुमको मुनासिब है कि पूजन श्री शिवजी महाराज का किया करो और बेलपत्र नित्य मन्दिर में जाकर शिवजी की प्रतिमा पर चढ़ाया करो। अगर एतबार न हो तो देखलो कान के बराबर में तिल है।

फल अंक ३

हे सवाल करनेवाले ! यह सवाल बहुत ठीक है। तुमको भाइयों व बेटों से बहुत खुशी होगी। कुछ रुपया गढ़ा-दबा पूर्वजों का मिलेगा, क्योंकि अब दिन खुशी के आये हैं। क्वार माह में बहुत फायदा होगा। अगर आपको ऐतबार न हो तो देखलो तुम्हारी भौंह पर तिल है। आप हनुमानजी का इष्ट करो वे सब पूरा करेंगे।

फल अंक ४

ओ सवाल कर्त्ता ! काम तुम्हारा बहुत जल्द होगा। शत्रु का कहना नहीं मानना चाहिये क्योंकि वह आपके ऊपर जबर-दस्त हो रहे हैं। किसी की बुराई मत करो, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। यदि न मानो तो देखलो आपकी पसली पर तिल है। अगर आप पर बन सके तो मंगलवार को गाय को गुड़ दिया करो।

फल अंक ५

हे सवाल करनेवाले ! कार्य तुम्हारे दिल का सिद्ध होगा। श्री भगवान की कृपा से दिन तुम्हारे खुशी के आये हैं। थोड़े दिन के बाद तुम्हारा रोजगार भी दक्षिण की तरफ से होगा। यदि एतबार न हो तो तुम्हारी छाती पर तिल है। तुम दुर्गा महारानी का पूजन किया करो।

फल अंक ६

अहो सवाल करनेवाले ! मतलब तुम्हारा पूरा होगा और श्री भगवान की कृपा से दिन तुम्हारे खुशी के आये हैं। तेरा रोजगार भी होगा, घर में कुछ उम्मीद भी होगी। और कुछ तुम्हारा इरादा है, सब पूरा होगा। अगर यकीन न हो तो देखलो तुम्हारी छाती पर तिल है। जहाँ तक मुमकिन हो गऊ ब्राह्मण की सेवा करो

फल अंक ७

हे सवाल करनेवाले ! तुम्हारा सवाल अच्छा है। आपको जमीन से धन मिलेगा और किसी आदमी से मुलाकात होगी।

पूर्व या उत्तर की तरफ से या और किसी ओर से मुराद हासिल होगी। यदि यकीन न हो तो देखलो तुम्हारे पेट पर तिल है। अपने इष्टदेव की पूजा किया करो।

फल अंक ८

हे प्रश्न करनेवाले ! कार्य तेरा सिद्ध नहीं होगा क्योंकि दिन तेरे बुरे हैं, कुछ नुकसान उठाओगे। परन्तु तुम्हारे कार्तिक से अच्छे दिन आ जायेंगे, घबराना नहीं। अगर तुमको यकीन न हो तो देखलो तुम्हारे पैर पर तिल है। यदि बन सके तो नित्य स्नान करके शंकर पर जल चढ़ाया करो।

फल अंक ९

हे सवाल करनेवाले ! प्रश्न तुम्हारा शुभ है। कुछ आशा होगी और उससे कुछ रोजगार भी होगा। बैरियों से बचना चाहिये। घबड़ाना नहीं श्री ठाकुर जी महाराज अच्छा करेंगे। यदि यकीन न हो तो देखलो तुम्हारी टाँग में तिल है। बन सके तो देवी का पाठ पूजन करो।

फल अंक १०

हे सवाल पूछनेवाले ! तेरा सवाल अच्छा है। दौलत तेरे हाथ आवेगी। खुशी किसी तरह की हासिल होगी। यकीन न हो तो देखलो तुम्हारे गाल पर तिल है। यदि बन सके तो कुत्तों के पिल्लों को दूध पिलाया करो।

फल अंक ११

हे सवाल करनेवाले ! मुराद तुम्हारी पूरी होगी। और जी में तेरे खुशी होगी। दिन तुम्हारे सावन या माघ से अच्छे

आयेंगे। तुम्हें अत्यन्त खुशी हासिल होगी। अपने मन में फूले नहीं समाओगे। यदि ऐतवार न हो तों देखलो तुम्हारी कमर में तिल है। चिड़ियों को दाना डाल दिया करो।

फल अंक १२

हे सवाल कर्त्ता ! सवाल तुम्हारा अच्छा नहीं है। जो मन में तुमनें सोचा है अकल से बाहर है। तुम्हारा किसी देहात या किसी वन में पड़ जाने में ताज्जुब नहीं है। चैत के महीने से दिन कुछ ठीक आयेंगे। शनिवार के दिन दोपहर के वक्त दान दिया करो। यदि यकीन न हो तो देखलो तुम्हारे माथे पर तिल है या आँख के नीचे है।

फल अंक १३

हे सवाली ! कार्य तुम्हारा पूरा नहीं होगा। आजकल के दिनों में तुमको बड़ा रंज रहता है। श्री भगवान को याद करें और फकीरों को उर्द की दाल और रोटी बाँटा करो। भगवान भला करेगा। यदि यकीन न हो तो देखलो तुम्हारी कमर पर तिल है।

फल अंक १४

हे प्रश्न करनेवाले ! तुम्हारा सवाल उत्तम है। घर में नई आशा होगी, किसी स्त्री से मुलाकात होगी। एक महीने में दक्षिण या पच्छिम में रोजगार होगा। लेकिन इस औरत के दिल में तुम्हारी तरफ से बुरा खयाल पैदा होगा। जो कार्य करो वह समझ सोचकर करना चाहिये क्योंकि अपनी आबरु बचाना अच्छा है। यदि यकीन न हो तो देखलो तुम्हारी इन्द्री पर तिल है। पीपल को सींचा करो।

फल अंक १५

हे सवाल करनेवाले ! आपके दिल की इच्छा पूरी होगी। किसी मनुष्य के सहयोग से पूरब या पश्चिम की ओर रोजगार भी होगा। थोड़े दिन में कुछ आशा होगी। यदि यकीन न हो तो देखलो तुम्हारी कमर पर तिल है। हो सके तो नित्य गाय को रोटी खिलाया करो।

फल अंक १६

अहो सवाल करनेवाले ! जो तेरा मतलब है वह अभी नहीं होगा क्योंकि तेरा इरादा कुछ अन्य रोजगार का है। अभी तेरे दिन खराब हैं और तीन साल तक ऐसे ही रहेंगे। भगवान शंकर का ध्यान करो और चींटियों को खिलाया करो। अगर यकीन न हो तो देखलो तुम्हारे हाथ में तिल है। बन्दीगृह में जाने का डर है।

फल अंक १७

अहो सवाल करने वाले ! जो तूने दिल में सोचा है, बात खुशी की है। तुमको खुशी हासिल होगी। दिल तुम्हारा खुशी चाहता है। फागुन या अषाढ़ के महीने में इस कदर खुशी होगी कि फूले नहीं समाओगे। तुम गौ, ब्राह्मण की सेवा करो। यदि यकीन न हो तो देखलो तुम्हारी नाक पर तिल है।

फल अंक १८

हे सवाल करनेवाले ! तुम्हारा रुपया बाहर है वह तुमको शीघ्र मिलेगा, और जो घर में बीमारी है उसका इलाज करो, बहुत जल्द आराम होगा। अगर बन सके तो बन्दरों को भुने चने इत्यादि डाल दिया करो। तुम्हें यकीन न हो तो देखलो तुम्हारी राग पर तिल है।

फल अंक १९

अहो सवाल करनेवाले ! जो तुमने सवाल किया उसका ये फल है कि दो माह में दक्षिण या पश्चिम की तरफ तुम्हारा रोजगार होंगा और श्री भगवान की कृपा से कुछ घर में भी आशा होगी। किसी मक्कार औरत से भी मुलाकात होगी। अगर यकीन न हो तो देखलो तुम्हारी राग पर तिल है। तुलादान करना चाहिये।

फल अंक २०

हे सवाली ! तेरा इरादा सफर का है। तुझे सफर में कुछ फायदा भी होगा और किसी आदमी से मुलाकात भी होगी। जहां तक हो सके श्रीगणेश का ध्यान किया करो। यकीन न हो तो देखलो तुम्हारी कूख पर तिल है।

नवग्रह प्रश्नावली अनुसार

इसके देखने की विधि यह है कि नीचे लिखे चक्र में अपने इष्टदेव का नाम स्मरण करके सवाल कर्त्ता अपने दाएँ हाथ की तर्जनी ऊँगली कोष्टक में रखे। उस अंक को अलग एक कागज पर लिखले फिर इसी प्रकार तीन बार ऊँगली रखवाये। जब तीनों संख्या लिखले तो उसे जोड़े के सब अंकों को फिर जोड़े। कहने का मतलब यह है कि तब तक जोड़े जब तक कि एक इकाई की संख्या न बन जाय। तब जो इकाई संख्या बचें उसी इकाई को दूसरे आगे लिखे ग्रह चक्र में देखे। जिस ग्रह कोष्ठक में वह अंक हो उसी ग्रह के आगे जो फल लिखा हो, वही पढ़कर हाल जाने या सुनाये।

उदाहरण—जैसे सवालकर्ता ने पहली बार ३८ पर तथा दूसरी बार ३४ पर और तीसरी बार ४७ पर ऊँगली रखी है, अब इन तीनों संख्याओं को जोड़ें। ३८-३४-४७ – ११९।

जोड़ने से ११९ बना अब इन्हें जोड़ें १-१-९—११।

अब इनका जोड़ ११ बना अब इसे भी जोड़ें १-१—२।

इनका जोड़ २ बना तो अब नवग्रह कोष्टक चक्र में देखें कि २ नम्बर वाले अंक में किस ग्रह का वास है। देखने से पता लगेगा कि दूसरे कोष्टक में चन्द्रमा का निवास है। सब आगे फल लिखे हैं, उनमें जो फल चन्द्रमा का लिखा हो वही पढ़ें, अथवा सुनें। यही आपके सवाल का जवाब है।

अंक चक्र विधान

[illegible]	३९	[illegible]	२९	१८	[illegible]
१२	४२	६७	६८	४८	३६
[illegible]	६२	८६	८१	६७	[illegible]
२१	७१	८९	७९	४७	२६
३१	८४	४६	६३	७४	१७
[illegible]	१३	१४	[illegible]	३४	[illegible]

नवग्रह चक्र

१	२	३
सूर्य	चंद्रमा	मंगल
६	५	४
शुक्र	बृहस्पति	बुद्ध
७	८	९
शनि	राहु	केतु

नवग्रह फल विचार

१-सूर्य फल विचार—

हे सवाली ! तुमनें जो विचार किया है, वह ठीक है, उसमें सफलता मिलेगी। लेकिन प्रयत्न करने से ही ये सब होगा। तुम्हारा विवाह सम्बन्ध भी ठीक जगह होना चाहिये। भाग्य अच्छा है, पुत्र की प्राप्ति होनी चाहिये। यात्रा करना भी समय-समय पर शुभ रहेगा। विवाह आदि कार्य में शत्रु तुम्हारे सामने न ठहर पायेगा, अन्त में विजय मिलेगी। रोजगार ठीक ही चलेगा तथा तरक्की भी होगी। यश के उम्दा-उम्दा कार्य करोगे लेकिन कर्ज मत करना अन्यथा बहुत दिन तक कर्जदार बने रहोगे। शरीर स्वस्थ, कभो-कभी रोग उत्पन्न होगा जो शीघ्र उपचार करने से दूर होगा। मित्रों में मान मिलेगा। लेकिन तुम्हारे मान को विपक्षी सहन न करने के कारण दिल में द्वेष रखेंगे। ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिये। आगे के आने वाले समय में शीघ्र हीं लाभ होगा। जमीन से या परदेश से धन मिलने की आशा है। बन सके तो सुबह स्नान करके सूर्य को जल दे दिया करो।

२-चन्द्रमा फल विचार --

हे सवाल करनेवाले ! समय ठीक आनेवाला है। अब तक दिन सामान्य थे। चिन्ता मत करो, सोचा कार्य शीघ्र हो पूरा होगा। किसी मित्र या संबंधी से भी कुछ सहायता मिलेगी। हो सकता है कि किसी स्त्री के प्रयत्न या उसके द्वारा कार्य में सफलता मिले। शादी ठीक घर में होनी चाहिये परन्तु स्त्री

विपरीत स्वभाववाली मिले। आगे चलकर संतान का सुख भी खूब मिलेगा। यात्रा में किसी अन्य व्यक्ति की सहायता से ही लाभ होगा। बाद-विवाद, झगड़े-मुकद्दमे आदि में धन व्यय करने पर सफलता मिलेगी। घर के परिवारियों को कुछ रोग रहेगा। खुद भी कभी रोग का विशेष झटका सहन करना पड़ सकता है। दूसरों के साथ भलाई करोगे वह तुम्हारे अहसानों की कोई कदर नहीं करेगा, फिर भी तुम उदार बने रहोगे। कुछ अनायास लाभ होना चाहिये। मगर कुछ कर्ज भी हो सकता है, जो देर से चुकेगा। बने तो शिवजी की पूजा किया करो।

३–मंगल फल विचार—

हे सवाल करनेवाले ! चिन्ता में ब्यस्त रहते हो। देन-लेन की फिकर लगी रहती है। भला करते बुरा होता है। मित्र, संम्बन्धी, रिस्तेदार व अन्य लोग अपना काम निकाल लेते हैं, किन्तु आपके काम नहीं आते हैं। धन भी आता है किंतु रुकता नहीं है। धन के आने में देर होती है, किन्तु जाने में देर नही होती है। जो कार्य करना चाहते हो उसमें विघ्न आते हैं तब पूरा होता है। फिर मन में प्रसन्नता नहीं होती है। विवाह आदि में कष्ट भोगने पर भी विजय अन्त में प्राप्त हो ही जाती है। यात्रा करने में कठिनाई और विपत्तियों का योग बनता है। सन्तान सुख भी इच्छानुसार नहीं है। जहाँ तुम चाहते हो वहाँ सम्बन्ध आदि का काम नहीं हो पाता है। गृह दशा अच्छे नहीं, इस कारण समय खोटा है। नौकरी धन्धा रोजगार भी मानो है ही नहीं, और यदि है भी तो बहुत कम। कुछ कर्जा भी लद जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

यदि बन सके तो काले कुत्तो को मंगल के दिन उड़द की दाल की रोटी तेल में चुपड़कर खिला दिया करो।

४–बुद्ध फल विचार—

हे प्रश्न पूछनेवाले ! आपको जो रोजगार की चिन्ता है, वह जल्दी पूरी होने वाली है। कहीं से धन भी थोड़ा बहुत मिलने की आशा है। मित्रों से सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि जो मित्र नहीं वह किसी प्रकार भी विश्वासघात नहीं कर सकता है। विवाह आदि का कार्य किसी दूसरे की मदद से धन खर्च करने पर जल्दी बनेगा अन्यथा बिना व्यय और बिना किसी की मदद के कार्य में कठिनाई आ जावेगी। स्वास्थ्य भी अक्सर खराब रहता है। चिकित्सा आए दिन ही होती रहती है। सन्तान का सुख है परन्तु इच्छानुसार नहीं। खराब संगति छोड़ने में भलाई है। नशा करना आपके लिए श्राप सिद्ध होगा। यात्रा प्रयत्न करने पर ही सफल होगी। बिना यत्न किये यात्रा निष्फल हो जायेगी। यात्रा में विशेष रूप से गैर-जिम्मेदार आदमी का कभी भरोसा मत करना। झगड़े, विवाद आदि में असफलता मिलने की सम्भावना रहे। काम में कोशिश की पहल नहीं होगी, अर्थात् कोशिश ढीली होने के कारण असफलता मिलेगी। बन सके तो गाय की सेवा किया करो।

५–बृहस्पति फल विचार—

हे सवाल करनेवाले ! अब तुम्हारे लिए थोड़ा-सा कष्ट रह गया है। शीघ्र ही अच्छा समय आने वाला है। नौकरी, रोजगार तथा धन्धा शीघ्र लगेगा। लाभ भी अच्छा होगा।

कर्जा आदि भी न रहेगा। मकान बननें का योग बनता है। जमीन से धन मिलना जान पड़ता है। सोचा कार्य जल्दी ही पूरा हो जाने की उम्मीद है। शत्रु भी मित्र बनते चले जायेंगे। दक्षिण या पश्चिम के अलावा अन्य किसी ओर से लाभ होगा। घर में खुशी भी होगी, सम्बन्धी मान प्रदान करेंगे। विवाह आदि सम्बन्ध इच्छानुसार होंगे, परन्तु घर में स्त्री आदि को रोग होगा जिसमें कुछ व्यय भी होगा। सन्तान का सुख देर से प्राप्त होगा। जब भी यात्रा करोगे लाभप्रद और शुभ रहेगी। परदेश में भी मित्र बनेंगे। विवाह आदि में भेंट देने में सफलता मिलेगी। चिन्ताएं जल्दी ही दूर होंगीं। परीक्षा में उत्तीर्ण होगे, तीर्थ आदि भी करोगे। कुछ दिन बाद नए-नए स्थान देखोगे। घर बनने की सम्भावना है, पीले धन का विशेष लाभ होगा। बने तो भूखे को भोजन करा दिया करो।

३६–शुक्र फल विचार—

हे प्रश्न पूछने वाले ! आपको रोजगार की जो चाहना है, वह शीघ्र पूरी होगी। किसी के बसीले से लाभ होगा। लाभ मूलधन या नौकरी आदि से विशेष रहेगा। शादी-विवाह आदि के कार्य में बने काम के बिगड़ने का भय बना रहेगा। इस प्रकार के कार्यों में विशेष सावधानी बरतनी चाहिये। सन्तान का सुख कम रहेगा। रहा भी तो कन्याओं के अधिक होने की सम्भावना जान पड़ती है। योग के अनुसार पुत्र कम और पुत्री अधिक होनी चाहिए।

यात्रा में सदैव लाभ ही होगा लेकिन साथियों से सावधान रहने की विशेष आवश्यकता है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। रोग भी आए दिन घेरेंगे परन्तु वे क्षणिक ही होंगे। जिस दिन भी दीर्घ समय का रोग होगा तो वह ठीक न हो सकेगा। विवाह आदि में अपने ही अन्दर-ही-अन्दर भेद दूसरों को बताकर या कोशिश करके विवाद में हराने की भरपूर कोशिश करेंगे। फिर भी तुम्हें सफलता ही मिलेगी। बने तो साधुओं की सेवा किया करो।

७–शनि फल विचार—

हे सवाली ! यद्यपि तुम्हारा समय इस वक्त ठीक प्रकार नहीं चल रहा है, फिर भी अनिष्ठ समय होने पर भी तुम्हारे धन्धे रोजगार में शीघ्र लाभ और सफलता मिलेगी। किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा विशेष लाभ होने की भी सम्भावना है। परन्तु समय के फेर से अपने ही आपके साथ विश्वासघात करने की कोशिश करेंगे। आपको विशेष सावधान रहने की जरूरत है। विवाह-शादी आदि कार्य निर्विघ्न सफल होंगे, परन्तु व्यय अधिक होगा और हो सकता है कि बाहर का पैसा भी सिर पर लद जाये। सन्तान की ओर से भाग्य ठीक है। बेटी-बेटा सभी सुन्दर और स्वस्थ होंगे। सुख सन्तान से प्राय: कम ही मिलेगा, परन्तु यात्रा में सफलता प्राप्त न होगी। बनते-बनते काम में रुकावट हो जायेगी। किसी के साथ विवाद न करें, क्योंकि विवाद में पराजय होनें की शंका रहेगी। आप किसी से झगड़ा न करें। बन सके तो नित्य भगवान का पूजन तथा

ध्यान करें तो कठिक वक्त का फेर भी ठीक समय में परिणित हो जायगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा परन्तु स्त्री रोगिणी रहेगी। ऊंचे स्थान पर भय रहेगा।

८-राहु फल विचार—

हे सवाल करनेवाले ! सबाल का फल ठीक नहीं जान पड़ता है। यद्यपि रोजगार ठप्प रहेगा फिर भी कुछ-न-कुछ तो चलता ही रहेगा। कर्जा होने का योग है। आमदनी का जरिया कम तथा व्यय अधिक होगा। विवाह सम्बन्ध के काम को शत्रु बिगाड़ने की कोशिश करेंगे। घर में कलह बनी रहेगी। उपद्रव से दूर रहना ही लाभदायक है। रोग घर में बना रहेगा। सन्तान का लाभ योग कम है। यात्रा में खर्च होगा। लाभ की आशा नाम मात्र ही होगी। मित्रों से भी सावधान रहने की आवश्यकता है। विवाद से दूर रहने में ही भलाई है अन्यथा इसमें असफलता ही हाथ लगेगी। घर में चोरी आदि हो जाने का खतरा होना है इसलिये बचकर रहें। नशे में हानि होने का पूरा-पूरा भय रहेगा। अपना दिला दूसरों से मिलना दुर्लभ हो जायगा। बिपत्ति बनी रहने की सम्भावना रहेगी। इसी की चिन्ता बनी रहेगी। बन सके तो श्रीगणेश का ध्यान किया करो।

९-केतु फल विचार—

हे सबाल करनेवाले। तुम्हारे लिए भगवान शंकर का ध्यान व पूजन करना लाभकारी रहेगा। समय ठीक नहीं है।

रोजगार ठप्प होगा। जर्ज हो जायेगा। चिन्ता बनी रहेगी। सोना पकड़ो मिट्टी होगा। जिसे भी अपनाओगे उसी से मिलना कठिन होगा। सम्बन्धी, मित्र आपके पीछे बुराई करेंगे। जिस काम को करना चाहोगे उसी में हानि होगी। विवाह आदि में विघ्न पड़ेगा। स्त्री चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी। शरीर में रोग लगा रहेगा। घर में कलह बनी रहेगी। भोजन में भी घाटा नजर आयेगा। गर्दिश का ही प्रकोप रहेगा। आपको संभलकर चलने की जरुरत है। सन्तान होगी परन्तु होगी दुखदायी। परदेश जाना पड़ेगा परन्तु वहाँ भी लाभ न होगा। विवाद में हानि होगी, धन व्यय होगा। काला धन विशेष नुकसान करेगा। आग और पानी हानिकारक होंगे। खुशी गम में बदलने की भी गुंजायश होगी। ६ माह आपके अवश्य ही इसी प्रकार व्यतीत होंगे तब कहीं सुख के दिन आवेंगे। हो सके तो भगवान का स्मरण करें और एक समय भोजन करके भी भूखे को अन्न खिलावें।

स्वामी फालनामा

(१) हजरत आदम अल्हे अस्सलाल	(२) हजरत शीष अल्हे अस्सलाल	(३) हजरत इद्रीस अल्हे अस्सलाम
(४) हजरत याकूब अल्हे अस्सलाल	(५) हजरत इब्राहीम अल्हे अस्सलाम	(६) अल्हे अस्सलाम हजरत इस्माईल
(७) हजरत सालेह अल्हे अस्सलाम	(८) हजरत यूसुफ अल्हे अस्सलाम	(९) हजरत सुऐब अल्हे अस्सलाम
(१०) हजरत अय्यूब अल्हे अस्सलाम	(१५) हजरत खिजर अल्हे अस्सलाल	(१२) हजरत दाऊद अल्हे अस्सलाम
(१३) हजरत सुलेमान अल्हे अस्सलाम	(१४) हजरत ईसा अल्हे अस्सलाम	(१५) हजरत मुहम्मद सल्हे अल्लाह अल्हे सलाम

जिस प्रकार हिन्दू रीत्यानुसार अनेंक विधियां सवाल बतानें की प्रश्नावलियों द्वारा बतायी गई हैं। इसी तरह यह स्लामी विधि से प्रश्नावली कही है। इसे मुसलमानी जबान में फालनामा कहा जाता है। यह फालनामा स्लामी मजहब को माननेवालों में हजरत अमीर-अल-मोमनीन का फालनामा कहलाता है। हजरत अली करम अल्लाह बजह का यह फालनामा कई मर्तबा का अजमायश किया हुआ है। जिस किसी इंसान पर काई सख्त मुसीबत पड़ जाये या कोई कठिन और बड़ा काम सामनें आ जाये, अथवा वह बिपत्तियों में उलझकर निराश हो, रंजीदा होवे तो उसे चाहिये कि शुद्ध मन से नीयत दुरुस्त करके उपरोक्त चक्र में लिखे कोष्टों में से किसीं एक कोष्ट में खुदा को याद करके अपनी ऊंगली रखे। इन सब कोष्टकों का मालिक जो एक नबी का पेगम्बर है। आपको अथवा प्रश्नकर्त्ता की मदद करते हुए प्रश्नकर्ता को यथोचित उपदेश (हिदायत) करेगा।

हिदायत उत्तर

१-यदि साफ नीयत से खुदाबन्द करीम को याद करके सवाल करनेवाले ने अपनी ऊंगली हजरत आदम अल्हे अस्सलाम के कोष्ट में रखी होगी तो परिणाम शुभ है। मनोकामना पूर्ण होगी अर्थात् ख्वाहिश पूरी हो जायगी। यदि किसी तरह के अभियोग में फँसा होगा वह उससे छुटकारा पावेगा तथा उसे सम्मान भी प्राप्त होना। सवाल शुभ है।

२-यदि हजरत शीष आहे अस्सलाम वाले कोष्टक में सवाल करनेबाले ने शुद्ध मन से ऊंगली रखी है तो कष्ट होवे तथा असंतोष (बेचैनी) बढ़ेगा। अगर सफर करनें का इरादा

हो तो थोड़े दिन देर से जावे। मन में सन्तोष रखने से ही मन की अभिलाषा पूरी होगी। सबाल अशुभ है।

३-हजरत इद्रीस अल्हे अस्सलाम वाले कोष्टक में यदि सबाल करनेवाले ने शुद्ध मन से अपनी ऊँगली रखी होगी तो उसकी इच्छा पूरी होगी तथा चित्त प्रसन्न होगा और मनो-कामनाएँ पूरी होंगीं। यदि सफर पर जाय या व्यापार करे तो लाभ होगा और यदि नौकरी करता होवे तो ओहदे में तरक्की होवेगी। घर तथा बाहर सभी जगह से इज्जत में इजाफा होवेगा। फल शुभ है।

४-यदि सवाली ने अपनी ऊँगली विशुद्ध मन से हजरत याकूब अल्हे अस्सलाम के कोष्टक में रखी होगी तो उसकी कामना कुछ देर से पूरी होगी। उस आदमी को विरह तथा बियोग का कष्ट भोगना पड़ेगा। तब इसके बाद जाकर कहीं उसकी मनोकामना पूरी होगी। प्रश्न मध्यम है।

५-यदि सबाल जाननेवाले ने अपनी ऊँगली साफ नीयत से अगर हजरत इब्राहीम अल्हे अस्सलाम वाले कोष्टक में रखी हो तो जो अभिलाषा या किसी मन की कामना के पूर्ण होने की बात सोची होगी। वह कुछ बिलम्ब से पूरी होगी। मंगल के दिन कोई पक्षी छुड़वा देना चाहिये। सवाल तुम्हारा मध्यम फल का है।

६-यदि हजरत इस्लाम अल्हे अस्सलाम के कोष्टक में सबाली ने शुद्ध मन से ऊँगली रखी होगी तो शुभ है। कार्य अवश्य पूरा होगा और शीघ्र होगा। यात्रा में सफलता और व्यापार में अधिक मुनाफा होगा। घर में बरक्कत होगी, कलह मिटेगी। चित्त को शान्ति मिलेगी। सबाल ठीक है।

७-अगर हजरत सालेह अल्हे अस्सलाम वाले कोष्टक में सवाल पूछने वाले ने पवित्र हृदय से ऊँगली रखी होगी तो धीरज (सब्र) रखने से मनोकामना पूरी हो जायेगी। यदि शीघ्रता करेगा तो नुकसान उठाना पड़ जायगा। ऐसे व्यक्ति को किसी फकीर के लिए जुम्मा की रात्रि को (शुक्रवार की रात्रि को) एक पाव आटा दान करना चाहिये। सवाल तेरा मध्यम है।

८-अगर ऊँगली पवित्र मग से सवाली ने हजरत यूसुफ अल्हे अस्सलाम वाले कोष्टक में रखी होगी तो उसके मन की इच्छा से सोचा हुआ काम जरूर पूरा होगा। मित्र प्रसन्न होंगे और उसके बैरियों का शीघ्र ही विनाश होगा या उनका अभिमान चूर्ण होगा।

९-यदि हजरत शुऐब अल्हे अस्सलाम के कोष्टक में सवाल करनेवाला आदमी साफ नीयत से ऊँगली रखता है तो कार्य के होने में बिलम्ब जाने। यात्रा में कष्ट मिले तथा व्यापार, नौकरी, रोजगार में अड़चन होवे और घर बाहर सब जगह चिन्ता घेरे रहेगी। सवाल अशुभ है।

१०-अगर हजरत अय्यूब अल्हे अस्सलाम वाले कोष्टक में सवाल करनेवाला अपनी साफ नीयत से ऊँगली रखे तो सभी कष्ट दूर होवेंगे। आगे आनेवाली आफतें भी रुक जायेंगी और जो अपने मन में काम सोचा होगा वह बहुत ही शीघ्र पूरा हो जायगा। सवाल शुभ है।

११-हजरत खिजर अल्हे अस्सलाम वाले कोष्टक में यदि साफ हृदय से पूछने वाले ने ऊँगली रखी होगी तो काम पूरा होने में कोई सन्देह नहीं है। औरत को कष्ट मिले। धन की

कुछ क्षति होगी और सब कार्य बिना किसी रुकावट के पूरे होंगे। सवाल मध्यम है।

१२–हजरत दाऊद अल्हे अस्सलाम वाले कोष्टक में अगर सवाल करनेवाले ने साफ नीयत से ऊँगली रखी है तो कार्य शीघ्र पूरा होगा और सफर में सफलता मिलेगी तथा घर में खुशी भी होगी। व्यापार करता हो तो मुनाफा होवे। अगर नौकरी करता हो तो तरक्की मिले। परन्तु इसका अपने ही सम्बन्धियों से कुछ बिगाड़खाता भी होवे और बाद में सब ठीक होवे।

१३–यदि हजरत सुलेमान अल्हे अस्सलाम के कोष्टक में सवाल करनेवाला अपनी साफ नीयत से ऊँगली रखता है तो लाभ ही लाभ है। मनोकामना शीघ्र पूरी होगी। घर में खुशी होगी तथा किसी बिछड़े मित्र से मिलन हो। शनिवार के दिन कुछ मिठाई, एक अँगूठी हरे रंग के नग जड़ी हुई उसे हरे रंग के वस्त्र में लपेटकर किसी मिट्टी की हड़िया में रखकर नदी में बहावे और फिर दूसरे दिन सुबह ही जो फकीर मिले उसे पेट भरके खाना खिलाये। सवाल मध्यम है।

१४-यदि सवाल पूछनेवाला व्यक्ति हजरत ईशा अल्हे अस्सलाम कोष्टक में ऊँगली रखे तो थोड़े दिन बाद ही उसकी इच्छा पूरी हो जायेगी।

१५-यदि सवाल जाननेवाला व्यक्ति हजरत मुहम्मद अल्हे अस्सलाम वाले कोष्टक में साफ नीयत से ऊँगली रखे तो शुभ है। नसीब अच्छा रहे, मान सम्मान रहे। कोई कष्ट व सोच न रहे। सभी सोचा हुआ कार्य पूरा हो। सवाल शुभ है।

❋ अमेरिकन प्रश्नावली अर्थात् फालनामा ❋

यह प्रश्नावली चक्र अर्थात् फालनामा अमेरिकन है जिसे हमने एक अन्य पुस्तक से जब्ब किया है। वैसे पुस्तक के संग्रह-कर्ता ने इस फालनामे के विषय में बताया है कि यह अँग्रेजी भाषा की प्राचीन पुस्तक से आम आदमी के लाभार्थ इस पुस्तक में दिया गया है। इस फालनामे को देखने की विधि इस प्रकार है—जब अपने सवाल का शुभाशुभ उत्तर देखना हो तब दिशा मैदान से फारिग होकर कुल्ला दातुन कर स्नान करे फिर यदि संध्या करता हो तो सन्ध्या करे। यदि नमाज पढ़ता हो तब उसे करे। यदि दोनों ही कार्य न करता हो तो ईश्वर का दो घड़ी ध्यान करके फिर नेत्र बन्द करके ऊँगली को चक्र के किसी भी कोष्टक में रखे। फिर आगे लिखे उत्तर में जिस कोष्टक का जो स्वामी है, उसके आगे लिखे का फल जाने।

प्रश्नावली चक्र

▣	▣•	▣••	▣•••	
▣▣	▣▣•	▣▣••	▣▣•••	
	••▣	•••▣	•▣▣	
	••▣▣	•▣▣▣	••▣▣▣	

उत्तर—

अशुभ फल है।

◦ मन माफिक फल प्राप्त होगा।

◦◦ ठीक अवसर आनेवाला है, सावधान रहें।

◦◦◦ मन मुताबिक वस्तु शीघ्र मिलेगी।

मनोकामना त्याग दीजिये अन्यथा हानि की सम्भावना है।

◦ कार्य को भाग्य भरोसे त्यागकर धैर्य करें।

◦◦ आपकी इच्छा पूरी होगी।

◦◦◦ अभी भाग्य साथ नहीं देगा।

◦ मनोकामना पूरी होगी और यात्रा में कष्ट होगा।

◦◦ जो मिल रहा है, उसी पर सब्र करो।

◦◦◦ मनोकामना पूर्ण होगी।

◦ मनोकामना त्याग दें अन्यथा विपत्ति में पड़ना पड़ेगा।

◦◦ यदि तुम्हारी कामना अनुचित नहीं है तो खुदा सुनेगा।

◦◦◦ किसी दूसरे की सहायता से कार्य बनेगा।

◦ आपकी अभिलाषा शीघ्र पूरी होगी।

◦◦ आपका भाग्य अभी साथ नहीं देगा।

प्रश्नावली चक्र

१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	६४
२	११	२०	२९	३८	४७	५६	६५
३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६६
४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	६७
५	१४	२३	३२	४१	५०	५९	६८
६	१५	२४	३३	४२	५१	६०	६९
७	१६	२५	३४	४३	५२	६१	७०
८	१७	२६	३५	४४	५३	६२	७१
९	१८	२७	३६	४५	५४	६३	७२

उत्तर

१–जल्दी करना उचित नहीं, काम चाहे देरी से हो मगर ठीक हो। सब्र करो तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण होगी, धैर्य रखें।

२–आपकी इच्छानुसार ही सफलता मिलेगी।

३–यह काम कड़ा है, कोशिश करते रहो थोड़े दिन बाद ही आपके सब काम सफल हो जायेंगे।

४–यह इरादा ठीक नहीं है। ऐसे विचार को मन से निकाल दो अन्यथा बिपत्ति घेर लेगी।

५–शत्रुओं की चिन्ता मत करना, सफलता तुम्हें ही मिलेगी।

६–आपका मनोरथ सिद्ध हो जायगा। चिन्ता मत करो थोड़े दिन की देर है।

७–यह काम बनना कठिन है, इसकी आशा बेकार जायगी।

८–कुछ दिन सब्र करें, भगवान इच्छा पूरी करेगा।

९–साहस और कोशिश की वजह से आपका मनोरथ सफल होगा।

१०–ईश्वर का धन्यवाद करना, आपकी कामना आपकी इच्छा के अनुसार पूरी हो जायगी।

११–निराशा त्याग सफलता की आशा करें।

१२–ईश्वर आपकी इच्छा पूरी करेगा उसी का भजन करो।

१३–ऐसा होना असम्भव है, इस बात को भूल जाइये।

१४–अपनी शक्ति के अनुसार कामना करो, इसकी अधिक आशा रखना बेकार है।

१५–इतना दुख करना ब्यर्थ है, आप सफल होंगे कोशिश करते रहना।

१६–यह घबराहट और निराशा उचित नहीं है, आपका काम पूरा होगा।

१७–आपकी इच्छा सफल होगी, निश्चय रहकर भजन किया करें।

१८–आपका मनोरथ सिद्ध हागा, फल शुभ है। प्रभू का स्मरण रखना चाहिये।

१९–तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी, निराशा त्यागकर धीरज रखना।

२०–हृदय को मजबूत बनाये रहें, मन साफ रखें तुम्हारा काम अवश्य बनेगा।

२१–यह काम ठीक नहीं है, इसका विचार छोड़ने में ही भलाई है।

२२–काम बन तो जायगा मगर थोड़ी देर लगेगी।

२३–तुम्हारे कष्ट के दिन आनन्दमय होनेवाले हैं।

२४–ऐसे कामों का विचार मत किया करो, वैसे यह काम तुम्हारा बनेगा।

२५–ईश्वर को तजकर यदि मनुष्य पर विश्वास किया तब काम में बाधा पड़ जायगी !

२६–शुभ घड़ी की प्रतीक्षा करें तुम्हें परम आनन्द मिलेगा।

२७–आपका मनोरथ सिद्ध होगा ईश्वर का धन्यवाद करो।

२८–उन लोगों पर भरोसा रखें जो तुम्हारे साथ सहानुभूति रखते हैं तभी काम बनेगा।

२९–सब्र करना उत्तम है, ईश्वर तुम्हें निहाल कर देगा।

३०–कुछ दिन सब्र करो सफलता मिलेगी।

३१–साहस और प्रयत्न की जरूरत है, शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी।

३२–इस विचार को छोड़दो। तुम्हारे लिये यह बात उचित नहीं है।

३३–ईर्षा करने वालों से बचकर इस काम के करने का विचार मिथ्या है।

३४–तुम्हारा प्रयत्न व्यर्थ है, यह काम आपके विरुद्ध है, व्यर्थ की शत्रुता मोल लेनी है।

३५–तुम्हारी अभिलाषा पूरी होगी मगर कोशिश करने के बाद पूरी होगी।

३६–निराशा व्यर्थ है, भगवान पर भरोसा रखना, सफलता मिलेगी।

३७–आपको यह बात ठीक नहीं है।

३८–तुम्हारी चीज तुम्हें शीघ्र मिल जायगी।

३९–आपकी मनोकामना पूरी होगी, ईश्वर की दया पर दृढ़ता रखना।

४०–ऐसे काम की सम्भावना करना व्यर्थ है, इस विचार का त्याग श्रेष्ठ है।

४१–ईश्वर तुम पर कृपा करेगा, कोशिश करना आवश्यक है। काम बनेगा।

४२–कार्य ठीक है, यह आपके पक्ष में है।

४३–इच्छा पूरी होगी, संकोच करना बेकार है।

४४–कुछ समय सब्र करो, आपका भाग्य उत्तम है। सफलता मिलेगी।

४५–तुम्हारी अभिलाषा पूरी होगी, ईश्वर का धन्यवाद करते रहें।

४६–तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा, निःसंकोच रहें घबड़ाने की जरूरत नहीं।

४७–तुम्हारा धन्धा चलेगा, प्रभू का स्मरण करना।

४८–कुछ दिन और सब्र करना, भगवान ने चाहा तुम्हारा काम शीघ्र बनेगा।

४६–ईश्वर की उपासना करना, तुम्हारा सब काम ठीक बन जायगा।

५०–दृढ़ता रखो खुद ही यह काम बनेगा।

५१–यदि पैसे का व्यय करो तब आपका काम जरूर बन हो जायगा।

५२–आपकी हार्दिक जरूरत पूरी होगी। भगवान पर उम्मीद रखना।

५३–भजन करना, तुम्हारा सब काम ठीक होगा।

५४–यह निष्फल विचार है, इसे त्यागना ही ठीक है।

५५–कुछ समय शेष है, आनन्द मिलेगा।

५६–भगवान तुम्हें सफल बनायेगा।

५७–सब कर शुभ घड़ी आ गई है, सब काम बन जायगा।

५८–इतनी भय और शंका मत रखो, भगवान से प्रार्थना करो काम बन जायगा।

५६–यह बात आपकी सामर्थ्य की नहीं फिर भी तुम्हें सफलता मिलेगी।

६०–इतनी घबराहट और भय कायरता है, साहसी बनिये।

६१–भगवान आपकी कामना पूरी करेगा।

६२–यह काम असम्भव है, अपना समय नष्ट मत करना।

६३–धीरज रखो परिश्रम का फल जरूर मिलेगा।

६४–कुछ दिन का समय शेष है, फिर आनन्द ही है।

६५–कोशिश करो वैसे आशा नहीं कि यह काम बन जावे।

६६–अन्तिम बार तुम्हें ही सफलता प्राप्त होगी, धीरज रखो और भगवान का भरोसा करो।

६७–तुम्हारा भाग्य उत्तम है, कुछ दिन बाद तुम्हें पूरा आनन्द मिलेगा।

६८–आपका मनोरथ सिद्ध हो जायगा, भजन कीजिये।

६९–तुम्हारा विचार निरर्थक है, इसे त्याग दीजिये अन्यथा तुम्हें पछताना पड़ेगा।

७०–आपका मनोरथ सिद्ध होगा, कुछ परिश्रम कीजिये।

७१–इतनी जल्दी मत करो, देर अवश्य लगेगी किन्तु काम ठीक बन जायेगा।

७२–इस काम का पूरा होना असम्भव है, इसे करने का विचार निरर्थक है।

महावीर प्रश्नावली के अनुसार

प्रश्नकर्ता शुद्ध मन से पवित्र होकर चक्र के कोष्टकों में से किसी कोष्टक पर अपनी ऊँगली रखे। फिर उस कोष्टक के भीतर को जो संख्या हो उसके सामने लिखे उत्तर को प्रश्न का उत्तर जानें।

१११	११२	११३	११४	१२१	१२२	१२३	१२४
१३१	१३२	१३३	१३४	१४१	१४२	१४३	१४४
२११	२१२	२१३	२१४	२२१	२२२	२२३	२२४
२३१	२३२	२३३	२३४	२४१	२४२	२४३	२४४
३११	३१२	३१३	३१४	३२१	३२२	३२३	३२४
३३१	३३२	३३३	३३४	३४१	३४१	३४३	३४४
४११	४१२	४१३	४१४	४२१	४२२	४२३	४२४
४३१	४३२	४३३	४३४	४४१	४४२	४४३	४४४

१११ तुम्हारा शकुन उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा। सब कामना सिद्ध होंगीं और आपको व्यापार में लाभ होगा। यही चित्त में चढ़ता है, लेकिन गुरुदेव की पूजा करना। शीघ्र कार्य बनेगा।

११२ तुम्हें इस काम के करने में लाभ नहीं। हमेशा चिन्ता बनी रहेगी। स्वप्न में अशुभ देखा तो व्यापार करोगे

उसमें लाभ न होगा। तब इस काम को छोड़ और कुछ करना।

११३ तुमको ठिकाना सुन्दर मिलेगा, चिन्ता दूर हो, विघ्न मिटे और कल्याण हो।

११४ तुमको लाभ होगा और कुल की बृद्धि हो। सुख-सम्पत्ति मिले और मित्रों से लाभ हो। तुम कुलदेव की पूजा नित्य करना।

१२१ पहले तुमको लाभ है। पीछे जहां जाओगे वहीं पर सम्मान पाओगे। पीछे कुछ चिन्ता हो। श्री शनीचर महाराज की पूजा करना जिससे तुम्हारी सब चिन्ता मिट सकती है।

१२२ तुम्हारे घर में फायदा हो, इष्ट की कृपा से आपकी एक माह के भीतर ही मनोकामना पूरी होकर कल्याण मिलेगा। श्री परमात्मा की पूजा करना।

१२३ इस कार्य के करने में तुमको सब तरह से सिद्धि प्राप्त होकर कुटुम्ब की बृद्धि और स्त्री तथा धन लाभ हो। इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हें चिन्ता धन की है, वह कुछ समय में मिट जाएगी।

१२४ तुम धन, सन्तान पाओगे। जो भी वस्तु भली या बुरी मिले वही लें। मन में कोई चिन्ता मत करना और ब्यापार में तुम्हें अति लाभ मिले। शनीचर देवता की पूजा करना, चिन्ता दूर हो जायगी।

१३१ जब बात उत्तम होगी तभी आपको फायदा मिलेगा। पुत्र अर्थात् धन सन्तान पाओगे। जो भी चीज गई है,

१३२ होगी वह मिलेगी। भगवान का पूजन करें, सब कामना सफल हों।

१३२ आपने मन में जो कार्य सोचा है, वह पूरा होगा तथा आपको हर्ष होगा। मन की सब चिन्ता दूर होगी। भजन फलदायक है।

१३३ धन की हानि होगी अथवा व्यापार में आपको फायदा न मिले उस काम को मत करना ही तुम्हें शुभ होगा। सोमवार के दिन श्री महादेव जी की पूजा करना और इस काम को त्याग और अन्य काम क करें।

१३४ तुम्हें इसी घर में लाभ अथवा बढ़ाई मिलकर राज्य से लाभ हो और पूरब दिशा हितकारी पड़े। मनवांछित फल मिले। धीरज धरें, श्री कुलदेवी की पूजा करने में लाभ है।

१४१ तुम्हें व्यापार में अति लाभ है और कपड़े के व्यापार में अति लाभ होगा। तुम्हारे दुख दर्द दूर होंगे। सात दिन पीछे आपको लाभ मिलना चाहिये।

१४२ आपका भाई-बन्धु व मित्रों से मिलाप हो, चिन्ता मिटे, चीज हाथ आवे तथा राज्य से लाभ होकर सब काम ठीक होंगे।

१४३ आपकी मनोकामना सिद्ध होकर धन-धान्य की चिन्ता पूरी होकर रहे। मन की कामना दूर होकर कल्याण और पुत्र का लाभ आयेंगे। आपका स्वप्न बहुत ही उत्तम है।

१४४ आपकी सकल कामना सिद्ध होगी। आपको धन-धान्य की अति अभिलाषा है, उसके फल शुभ हैं। स्वप्न में

देवी का दर्शन हो तब ठीक है, किसी बात का सन्देह मत करना ।

२११ सवाल आपका फलदायक है और कुछ धर्म करें जिससे आपकी सब चिन्ता मिटे तथा धनधान्य का सुख मिले। यदि स्वप्न में अच्छी बात देखें वह बुरी है। फूलों की माला देखना अति सुखदायी है।

२१२ आपका मनोरथ सिद्ध होगा। कुल में वृद्धि बढ़ेगी और अर्थ सिद्ध होगा। आपके चित्त में परदेश जावें की है। आपकी कामना फलेगी।

२१३ आपके हृदय में स्त्री और धन की चिन्ता है, वह एक मास के शुरू से अन्त तक फल मिलेगा। भाई-बन्धुओं से मिलाप होगा। माता-पिता से पूछकर कार्य करना और अपने कुल देवता का स्मरण करके ब्राह्मण-भोजन कराना।

२१४ तुम्हारा कल्याण होगा और नई वस्तु मिलेगी। आप चिन्ता न करें, आपको धन की चिन्ता है वह शीघ्र ही दूर होगी तथा लाभ होगा। आपको शनि की पूजा उत्तम है।

२२१ तुम्हें तीन वर्ष से चिन्ता है। दुख तथा क्लेश है वह दूर हटकर लाभ मिलेगा।

२२२ आपके घर में कलह रहता है तथा स्त्री में तुम्हारा प्रेम भी कम है। मित्रों से अनबन रहनें का तुम्हें क्लेश है। नियमित भगवान का भजन करें और माता-पिता की सेवा करना।

२२३ तुम्हें चिन्ता है कि तुम्हारा माल पराए हाथों पड़ा है,

क्योंकि जिस कार्य को आप करते हैं, उसमें लाभ नहीं मिलता है। घर में कलह रहता है, वह कुछ दिन में मिट जायगा।

२२४ तुम्हें पराये घर की फिक्र है, उसी की चिन्ता बहुत है। आपके घर में कलह है, वह परमात्मा और नवग्रहों की पूजा करने से मिट जायगी।

२३१ आपके घर में शीघ्र सुख और लाभ होंगे। यदि आप स्वप्न में सूखा बृक्ष अथवा सूना नगर देखेंगे तब बहुत बुरा है।

२३२ आप इस कार्य को मत करना, इसमें सुख न मिलेगा। आपके घर में विरोध है और व्यापार में लाभ नहीं है, आपके घर अनिष्ट है इसलिए श्री सत्यनारायण की पूजा में भलाई है।

२३३ इस कार्य के करने में तुम्हें चिन्ता बढ़ेगी। कार्य में बिलम्ब है। कुछ और कार्य करना, सब चिन्त मिट जायगी। अपने कुल देव की पूजा करना इससे कल्याण और लाभ है।

२३४ आपके यहाँ सदा कलह रहती है और कुटुम्ब में एका नहीं है। तुम्हें चिन्ता है वह सब परेशानी शीघ्र मिट जायेगी। पीपल की आराधना करने से बहुत ही सुख मिलेगा।

२४१ आपके घर में सुख बढ़कर सभी कामनाओं की सिद्धि होगी। आपके मन की चाहना का फल मिलेगा। लाभ के लिए उपाय करें।

२४२ आपको घर बहुत प्रिय है, आप सावधान रहना ये सब लाभकारी है और व्यापार में आपका लाभ है लेकिन

सूर्य व्रत करें जिससे आपके शरीर को सुख मिलेगा।

२४३ तुम्हें व्यापार में लाभ होगा और मन का सन्देह दूर होगा, सुख भी मिलेगा, घर में आनन्द बढ़ेगा। आप कुछ धर्म में रुचि रखना इससे सब मन की इच्छा पूरी होगी।

२४४ तुम्हें सुख है, लाभ है और चिन्ता है। तिल अथवा मस्सा है जिससे तुम्हारा कल्याण है।

३११ आपको अच्छे स्थान से लाभ होकर सारी चिन्ताएँ भी दूर होंगीं। माता-पिता की सेवा करना और कुल-देव की आराधना। आप सुविधानुसार ब्राह्मणों को भोजन करावें, मन इच्छा पूरी होगी।

३१२ आपकी मनोकामना सफल होंगीं और धन-धान्य का लाभ अर्थात् कुटुम्ब की वृद्धि बढ़ेगी। अगर स्वप्न में हाथी देखा है वह श्रेष्ठ है।

३१३ तुम्हें धन की चाहना है लेकिन आपके बैरी बहुत हैं, जिससे चिन्ता अधिक है। आपकी सब परेशानी मिट जायगी परन्तु आप परमात्मा का भजन करें। लाभ नजदीक है।

३१४ आपका कल्याण निश्चित है। धर्म करना लाभदायक है। चिन्ता मत करना, कामना पूरी होगी। और अर्थ लाभ मिल जायेगा। श्री गणेश का पूजन करना श्रेय-कर है।

३२० आपके घर में लाभ निश्चित है और व्यापार में तुम्हें लाभ होगा। सफर में तुम्हारे साथ चोर इत्यादि लगेंगे जिसका डर बहुत होगा।

३४५ आपको व्यापार में लाभ मिलेगा, परमात्मा का पूजन करके आप थोड़ा धर्म में मन लगाइये। सभी मनोरथ सद्ध होंगे।

३४१ आपके मन का काम सिद्ध होगा और चिन्ता दूर होगी, सोच मत करना। आपको मनवांछित फल मिलेगा और सबसे प्रीति, लाभ होगा। कुटुम्ब में अति सुख होगा। शकुन उत्तम है।

३४२ आपका सब कार्य मन का सिद्ध होगा और चिन्ता दूर होगी। हिम्मत करें तब मनोकामना तुम्हारी फलेगी परन्तु श्री भगवान का पूजन करना। शकुन आपका अति उत्तम है।

३४३ आपके बैरी बहुत आदमी रहते होंगे। चित्त में बहुत घबराओ मत। जो कार्य आपनें चित्त में बिचारा है वह बनेगा। इस काम में तुम्हें लाभ नहीं।

३४४ इस काम के करते में तुम्हें लाभ होगा। आपका मित्र-बन्धुओं से मिलाप होगा तथा सुख मिलेगा। यह शकुन हितकर है।

४११ आपका मनोरथ सिद्ध होगा और चिन्ता से खेद है, सो तुम्हें धन-धान्य का लाभ है। श्री परमेश्वर की पूजा करना। शकुन उत्तम है।

४१२ आपकी चिन्ता कुछ दिन में मिट जायेगी। आपकी वस्तु दूसरे के हाथ में है, धैर्य रखें मिलेगी।

४१३–आपकी चिन्ता मिटेगी, हिम्मत रखें। धनोपार्जन व व्यापार की चिन्ता मिटेगी। कुछ पुण्य बिचारें। शकुन श्रेष्ठ है।

४४१ आपको कुछ चिन्ता है, वह एक मास के अन्त में दूर

लाभ हो। आप अपने घर में बैठकर ही व्यापार करें तब अति लाभ है।

३१२ धन का नाश हो और मन में बहुत ही चिन्ता उपजेगी। न आप अर्थ पायेंगे। इस काम के करने में लाभ नहीं। आप धैर्य रखें।

३१३ आपको अर्थ लाभ और सौभाग्य मिले तथा आपके बैरी का नाश हो, धन-धान्य की बृन्धि हो। इष्ट मित्रों से लाभ तथा दुख का विनाश। तुम श्री सत्यनारायण का व्रत करें।

३२१ तुम्हें चेती में अर्थात् व्यापार में बहुत लाभ पड़े और मन में चाही पूरी हो। धन का सुख है। आपको मार्ग में भय लगेगा और चिन्त नहीं ब्यापेगी। हनुमानजी का जाप लाभदायक है।

३३१ जो आपके मन में चिन्ता है, वह सब दूर होकर लक्ष्मी की प्राप्ति है, कुटुम्ब में बृद्धि तथा आपका काम पूरा हो। शकुन श्रेष्ठ है।

३३२ आपके मन का मनोरथ पूरा होगा और शीघ्र फलेगा। चिता तनिक भी न करें, आपके माता-पिता, भाई-बन्धु तथा इष्ट मित्रों में बढ़वार होगी। आपका भला अवश्य होगा, इसलिए कुछ पुण्य विचारें। शकुन यह आनन्ददायक है।

३३३ आपको घर के कार्य में लाभ होगा, सब चिन्ता मिटे। भाई-बन्धु तथा मित्रों से मिलाप होना है। सभी चिन्ता अर्थात् दुख का नाश होगा। आपके घर में कल्याण लाभ होगा।

होगी, ब्यापार में सुख, लाभ, मनोरथ फले। ईश्वर का पूजन करें। शकुन भला है।

४२१ आपके मन में परदेश जाने की है, इसलिए जायें, मनोंरथ पूर्ण हो। आप कुलदेवी की पूजा करना। शकुन उत्तम है।

४२२ आपके मन में चिन्ता है। जो काम करें विचारकर करें कुछ हानि तो कुछ दिन होगी परन्तु बाद में लाभ हो लेकिन श्री सत्यनारायण जी का ध्यान करना। शकुन ठीक है। आपका समय ठीक आनेवाला है। चिन्ता मिट जायगी।

४२३ आपके घर में लाभ हो, बैरियों का नाश हो। सुख-सम्पत्ति मिलेगी। कुटुम्ब में फल पुत्र का लाभ होगा। आप एक दीपक देवता के मन्दिर में जलाओ। शकुन अच्छा है।

४२४ आपके घर में चिन्ता अर्थात् रोग बसे हैं, ये कुछ दिन में दूर होंगे। मनोकामना बने।

४३१ आपको लाभ होगा और शरीर की चिन्ता, रोग सब दूर होंगे और किसी स्थान की प्राप्ति होगी। आपके सब काम बनेंगे। जहाँ भी आप जाओगे शकुशल पहुँचोगे।

४३२ आपका लाभ है, सब चिन्ता दूर, धन-धान्य का लाभ और सुख होगा। परदेश जाना उत्तम है।

४३३ आपके मन में शंका हो वह काम मत करना। सुख मिलेगा। धैर्य रखकर दान करो। नारायण की कृपा होगी। शकुन मध्यम है।

४३४ आपका शरीर क्लेश में है, अथवा भाई-बन्धु से अनमन

रहते हो और जो मन में काम विचारा है, वह बनेगा। सब कामना पूरी होंगीं, शकुन उत्तम है।

४४१ आपको फल प्राप्त होगा कोई उपाय करो। डरो मत लाभ होगा। जो आपने विचारा है, वह काम बनेगा। शकुन उत्तम है।

४४२ उस काम के करने से आपको सुख न मिलेगा और बहुत रोग का डर है लेकिन इसमें लाभ है। शिवजी के मन्दिर में एक दीपक का प्रकाश करना चाहिये। शकुन मध्यम है।

४४३ यह काम अशुभ है, इसमें चिन्ता होगी और काम का बिगाड़ होगा। आप नवग्रह पूजा अपने घर करो तब कल्याण होगा। शकुन मध्यम है।

४४४ आपको व्यापार में लाभ होगा और मन में कुछ चिन्ता होगी अर्थात् खेद पाओगे। कुछ दिन बाद आपको ठीक फल मिलेगा और सकल कामना सिद्ध होंगीं। लेकिन श्रीराम-नाम की गोली बनाकर जल में मछली अथवा जीवों को चुगाओ तो महा सुखदायी फल मिलेगा। यह शकुन आपका महाश्रेष्ठ है।

राशि चक्रावली के अनुसार

इसमें भी यह विधि है कि जो व्यक्ति अपनें सवाल का शुभाशुभ फल जानना चाहे उसे चाहिये कि वह पहले पवित्र हो। अपनें कुल के इष्टदेव के नाम का अपने मन ही मन में ११ बार या २१ बार स्मरण करके दाएँ हाथ की तर्जनी ऊँगली को अपनी नाक के उस नथुनें से उस समय लगाए कि जिसका स्वर चल रहा हो। फिर उस ऊँगली को नेत्र बन्द करके प्रश्नावली चक्र के कोष्टक में रखे। फिर देखे कि कोष्टक में किस देवता का नाम लिखा है। उसे पढ़कर फिर आगे प्रश्नावली के उत्तर लिखे हुए हैं। उन उत्तरों को पढ़कर अपनें सबाल का उत्तर जाने। भगवान शिव की कृपा से लगभग ठीक उत्तर ही मिलेगा।

काली	तारा	महाविद्या
सोरसी	भुवनेंश्वरी	सिन्नमस्ता
छिद्द विद्या	कमला	ध्वामावति
मातंगी	बगुला मुखी	भैरवी

काली—हे सवाल करने वाले ! तेरा सवाल ठीक है और अपने यथावत् समय पर पूरा होगा। ये वर्ष लाभ की दृष्टि से आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। शारीरिक सुख भी कम ही मिल पायेगा। चिन्ताएँ विशेष रहने के कारण मानसिक कष्टों को सहन करना पड़ेगा। चिन्ता की संवेदना प्रायः हर समय ही बनी रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी कुछ ठीक न रहेगी। समय-समय पर पैसे का अभाव बना रहेगा। उद्योग-धन्धे की हालत साधारण रहेगी जिसके कारण काम-धन्धे की ओर से सन्तोष न होवेगा। कुछ भी कार्य करने से पहले भरोसा न होगा कि यह पूरा होगा या नहीं ! बराबर सन्देह बना रहेगा जिसके कारण से बुद्धि ठीक प्रकार से काम नहीं करेगी और कार्य के करने में असफलता ही हाथ लगेगी। आपके तथा परिवार के लिए निरन्तर कष्ट पहुँचाने का योग भी जान पड़ता है। अतः समय के कुचक्र को कम करने के लिये चाहिये कि मंगलवार या शनिवार के दिन हनुमानजी का व्रत धारण कर चोला चढ़ायें। हनुमानाष्टक का पाठ करें तो आने वाली विपत्तियों से बहुत कुछ छुटकारा मिलेगा।

तारा—हे प्रश्न करनेवाले ! आपका सवाल शुभ है। विचार अच्छा है; जो कार्य सोचा है शीघ्र पूरा होगा। ये वर्ष समृद्धि और विकास के लिए सुखद रहेगा, किन्तु चिन्ताओं के कारण कुछ मानसिक कष्ट बना रहेगा। पारिवारिक विपत्ति भी बनी रहेगी, जिसके कारण चिन्ता बनी ही रहेगी। मित्रों से विरोध बना रहेगा। वैमनस्यता बनी रहने के कारण लाभ की आशा कम ही रहेगी और खर्चा अधिक ही बना रहेगा। देह का सुख भी सामान्य रूप से ही मिलेगा। बिना बात ही किसी से झगड़ा या वाद-विवाद होने का योग बनता

है इसलिये सावधान रहना चाहिये अन्यथा कुचक्र में फँसकर धन की विशेष हानि हो सकती है। अपवाद के कारण व्यर्थ ही बल, धन और बुद्धि का व्यय होगा। तुम्हारे लिए जल से भय है इसलिए तुम्हें जल के किनारे अर्थात् कूआ, बाबड़ी, जलाशय तथा पोखर या नदी पर जाय तो सावधानी बरतनी चाहिये। समय के कुचक्र की ताकत कम करने के लिए सोमवार के दिन भगवान शंकर का उपवास करना उत्तम रहेगा। यदि बन सके तो किसी भूखे को भोजन भी करावे तो बुरे दिनों का फेर कुछ टल जायगा।

महाविद्या—हे सवाल करनेवाले ! सवाल आपका उत्तम है। लोचा कार्य पूरा होगा। इसका प्रतिफल आपके लिए शुभ रहेगा तथा वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रायः सामान्य रहेगा और उत्तरार्द्ध भाग उत्तरोत्तर ठीक रहेगा। धन्धा, रोजगार, व्यवसाय तथा चाकरी जो भी करते आ रहे हो, वह ठीक चलेगा। उसमें कुछ उन्नति भी होगी। शारीरिक सुख भी इस वर्ष ठीक रहेगा। क्रिया शक्ति भी भली प्रकार से कार्य करेगी। मित्र, सम्बन्धी, कुटुम्ब-परिवार सभी में मेल की भावना अधिक बढ़ेगी। कुछ विश्वासघात का भय है, उसके लिए तुम्हें सावधानी बरतनी चाहिये। यात्रा करने का योग बनता है। उसमें भी लाभ हासिल होगा। जमीन से या अन्य किसो प्रकार से अनायास लाभ भी होना चाहिये। नये कामों के करने में रुचि अधिक रहेगी। पारिवारिक सुख भी अच्छा मिलेगा। जो काम शुभ करना विचारोगे वह शीघ्र पूरा होगा। घर में खुशी भी होगी बाहर से धन मिलने की भी सम्भावना है। निरन्तर प्रगति के लिए बुधवार का व्रत करे तथा श्री गणेश का विधिवत पूजन करे तो धर्म कार्य शुभ फलदायक रहेगा।

सारसी–हे सवाल करनेवाले ! आपका सवाल बहुत ही उत्तम है। जो कार्य करना आपने विचारा है, वह बहुत ही शीघ्र पूरा होगा। आपका समय अब ठीक आ रहा है। यह साल भी आपके लिए शुभ और लाभकारी रहेगा तथा दो माह बाद कुछ मन्दी आकर फिर फायदा होगा। दीपावली के बाद के दिन और भी बढ़िया आवेंगे। दिन-पर-दिन स्थिति का सुधार होता चला जायेगा। शुभ लाभ में भी वृद्धि होगी। देह को भी ठीक प्रकार से सुख मिलता रहेगा। व्यवसाय, नौकरी आदि में भी लाभ की दृष्टि से यथोचित उन्नति होगी और सुचारू रूप से सब काम चलता रहेगा। यात्रा आदि का काम कम रहे। जहाँ तक हो वह सब घर बैठे ही पूरा हो। यदि कभी यात्रा करने की जरूरत होगी तो यात्रा में भी फायदा होगा। पहले तीन माह शुभ फल के देनेवाले होंगे और मध्य के तीन माह सामान्य तथा अन्तिम तीन माह कुछ खराब रहेंगे फिर ठीक दिन आवेंगे। घर में पुत्र लाभ भी होने का योग बनता है। सुख समृद्धि के लिए अमावस तथा पूरणमासी को व्रत रखना अनुकूल है।

भवनेश्वरी–हे सवाल करनेवाले ! जो मनोरथ है वह अभी पूरा नहीं होगा। समय अच्छा नहीं चल रहा है। यह वर्ष आपके लिए विशेष ठीक नहीं है बल्कि यों कहिए कि फायदा के बजाय हानि अधिक होने का योग बनता है। अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ जाने दो, कोई अजीब बात नहीं है। कष्टों के कारण अनेकों परेशानियाँ भुगतनी पड़ेंगीं जिनसे कुछ गुप्त विचार प्रकट होंगे। मन ही मन में अनेकों चिन्ताएँ कचोटती रहेंगीं, जिससे कुछ मुसीबत प्रतीत होगी। आमदनी कम और खर्च अधिक होगा परन्तु एक बात

बहुत सुन्दर रहेगी कि आपको धैर्य, मनोबल तथा शीलता पूर्णवत बने रहेंगे। किसी भी उद्योग-धन्धे, व्यवसाय को करेंगे उसमें लाभ की मात्रा बहुत ही कम रहेगी, जिससे खर्च चलना कठिन होगा। किसी कार्य को करने में चित्त स्थिर न रहेगा। यह हर समय चलायमान रहेगा तथा काम के करने में बुद्धि भी न लगेगी। बने कार्यों में न होने का सन्देह बना रहेगा। पूर्णरूप से आत्म-सन्तोष नहीं हो पायेगा। शारीरिक सुख सामान्त तरह से प्राप्त होगा। सुख-शान्ति के लिए बुधवार का व्रत रहना श्रेष्ठ तथा हितकर है।

छिन्नमस्ता–सवाल जानने के जिज्ञासु ! यह सवाल तुमने ठीक सोचा है। कार्य पूरा होगा परन्तु किसी दूसरे की मदद से होगा। यह वर्ष आपके लिए शुभ फल देनेवाला है। इस वर्ष के पहले चार माह विशेष सुन्दर नहीं हैं, दूसरे चार महिनों में ठीक सुधार होगा। अन्तिम चार माह तो बहुत ही ठीक हैं। जो कार्य करोगे उसी में लाभ होगा। उद्योग तथा व्यवसाय ठीक प्रकार से बने रहेंगे। लाभ की गुंजाइश अधिक होगी। आमदनी और खर्च का काम सुचारु ढंग से चलता ही रहेगा। शरीर सम्बन्धी सुख भी यथावत् ठीक प्रकार से बना रहेगा। सदैव नए-नए कार्य करने की प्रेरणा रहेगी। यदि उन्हें किया तो अवश्य सफलता मिलेगी। बन्धुओं और मित्रों में मेल-मिलाप और घनिष्टता में बढ़ोत्तरी होगी और कुछ नए मित्रों से भी मुलाकात होगी। समय-समय पर मान-सम्मान भी भली प्रकार से प्राप्त होगा, कार्यों में सफलता मिलेगी। मकान बने या जमीन मिले ऐसा योग बनता है। प्रगति के लिए शिव की उपासना करना तथा पूजन करना हितकर है।

छिद् विद्या ! हे सवाल करनेवाले ! तूने जो विचारा है, वह सवाल ठीक है। काम जरूर बनना चाहिए। कुछ बाहर से धन लाभ होना चाहिए। यह वर्ष तुम्हारे लिए उत्तम है और समय-समय पर यथोचित फायदा होता रहे। जमीन से धन मिलनें का योग बनता है। किसी परदेशी से मुलाकात हो। घर में प्रसन्नता हो। चार माह बाद दिन कुछ खराब आयेंगे, किन्तु बाद में समय अच्छा आ जाये। इस साल आपके लिए पारिवारिक सुख में अधिक बढ़ोत्तरी हो तथा नए कार्यों के करनें में अधिक प्रेरणा जागे और करने में उसके सफलता हाथ लगे, जिससे उन्नति की स्थिति और भी दृढ़ होती जायगी। कुछ बढ़िया और घनिष्ट मित्रों से तथा कुछ नए व्यक्तियों से मित्रता के सम्बन्ध बढ़ेंगे। समय आने पर हर्ष और सम्मान यथेष्ट मात्रा में प्राप्त हो, किन्तु वर्ष के अन्तिम दिनों में कुछ बुरे दिन जरूर आयेंगे जिनसे अनेक मन में भ्रांतियाँ उत्पन्न होंगीं, जिनके कारण ही मन को खिन्नता हो। कुछ रोग होनें का भी योग बनता है। धन व्यय हो। थोड़ा रुकावट आत्म-बल में आवेगी। नित्य शुभ कामना हेतु हनुमान पूजन तुम्हें लाभप्रद है।

कामना—हे प्रश्न करनेवाले ! तुम्हारा प्रश्न उत्तम है। दिल का सोचा हुआ कार्य बनें, दिन अच्छे आए हैं। घर में खुशी हो, मन की मुराद पूरी हो। जीवन सुखमय व्यतीत होवें का योग पड़ रहा है। तुम जो भी नया काम करेंगे उसमें तुम्हें उन्नति की प्राप्ति हो। मित्रों के साथ मिलाप होकर आमद में बढ़ोत्तरी हो और प्रेम की घनिष्टता भी हो। इसके अतिरिक्त

अन्य नए-नए आदमियों से अच्छा सम्बन्ध प्रेमपूर्वक स्थापित हो। कुछ नए तथा लाभदायक शुभ सन्देश भी मिलेंगे, बाहर यात्रा करने का विधान बनता है, जिससे यात्रा करने से अधिक फायदा हो और इच्छित कार्य को करने में हर प्रकार से तुम्हें सफलता प्राप्त हो। वर्ष के प्रथम चार माह शुभ फल देनेवाले होंगे तथा मध्य के चार माह सामान्य होंगे और शेष चार माह कुछ आपको कुछ हानिकारिक रहेंगे। सूर्य को जल चढ़ाना लाभप्रद है।

छ्वामावति–हे सवाल करनेवाले। तुम्हारा प्रश्न सामान्य है। जो सवाल दिल में विचारा है, उसके पूरा होने में कुछ सन्देह है फिर भी कुछ व्यय करने तथा मेहनत करने से काम की पूर्ति हो जायगी। यह वर्ष आपके लिए न विशेष लाभ का है और न विशेष हानि का है। अर्थात् वर्ष सामान्य ही रहे। व्यापार, उद्योग व व्यवसाय का काम सब सामान्य रूप से चलते रहें। इसके बावजूद यदि तुम कोई विशेष काम करना चाहोगे तो उसमें आपको कोई विशेष प्रगति न हो पायेगी। आमदनी पहले की वनस्पति कुछ कम ही होगी तथा खर्च आमदनी से अधिक होगा जिससे मूल पूंजी को घाटा होगा। परिवार में कुछ झगड़ा-झंझट और कष्ट हो। घर के सदस्यों में मन-मुटाव तथा कुछ तनातनी-सी बनी रहे, जिसके कारण कुछ अपव्यय भी हो। अन्य काम यथावत चलने में रोड़ा लगे। यह सब होने पर भी विवेक बल ठीक रहे, आपको मित्र-वर्ग का सहारा मिलेगा।

मातंगी—हे सवाल पूछनेवाले ! यह वर्ष तेरे लिए शुभ है। किन्तु वर्ष के कुछ दिन प्रथम के खराब हैं। ये कार्य तुमने सोचा है, वह जरूर पूरा बनकर रहे, परन्तु किसी अन्य की सहायता लोगे। सब प्रकार के सुख होंगे और शरीर सदा स्वस्थ बना रहे। उद्योग का व्यवसाय यथावत् ठीक प्रकार से चलता रहे। कुछ समय उपरान्त व्यवसाय में ठीक फायदा होगा। आमदनी अधिक और व्यय कम रहे। जमीन से रुपया मिले। नए कार्य करने पर अच्छी सफलता मिले। मित्रों तथा स्वजनों से मेल-मिलाप में घनिष्टता हो। नए मित्रों की बढ़ोत्तरी होगी और किसी स्त्री की सहायता से लाभ भी हो। आत्मबल, सन्तोष बढ़े और अच्छा समाचार मिले। यात्रा आपके लिए फलदायक हो। घर में मंगल कार्य तथा मान-सम्मान यश प्राप्त हो। धन की बढ़वार हो। आप जिस कार्य में हाथ डालेंगे उसी में यश पाओगे।

बगुला मुखी—हे सवाल करनेवाले ! सवाल आपका उत्तम है, सोचा कार्य बने। आपके घर में कुछ क्लेश बनी रहती है, वह शीघ्र दूर हो। मित्रों के सम्बन्ध अच्छे होंगे। घर में खुशी हो, मन की मुराद हासिल हो, सन्तान का सुख ठीक हो, मन की मुराद हासिल हो, सन्तान का सुख उत्तम मिले, बाहर से कुछ धन का फायदा होना चाहिए। शरीर निरोग बना रहे, मित्रों के द्वारा आपको फायदा हो। व्यापार रोजगार में तरक्की हो। जमीन से अथवा परदेश से अचानक फायदा होने की सम्भावना है। किसी चरित्रहीन महिला से तुम्हारी मुलाकात हो। आपका सावधानी बरतने का काम है अन्यथा हानि उठायेंगे। शादी-विवाह सम्बन्धी कार्य हो जिससे तुम्हें प्रसन्नता हासिल हो। नया कार्य ठीक नहीं, नए मित्र से कुछ सावधान

रहनें की जरूरत है। किसी तरह का विश्वासघात होवे की आशंका है। बुरे दिनों का फेर टालनें के लिए भगवान शंकर की उपासना उत्तम है।

भैरवी–हे सवाल करनेंवाले ! सवाल मध्यम है। काम के होनें में शंका है। काम को करें उसे खूब समझकर करना। मित्रों से चेतन्य रहें, कोई आपके साथ विश्वासघात करने की चेष्टा अवश्य करेगा। घर में खुशी हासिल होगी, और किसी नए जीव का आगवन होगा। परदेश गवन करना आपके लिए हानिप्रद रहे, इसलिए परदेश जानें का विचार त्याग देना ही उत्तम है। शरीर में कष्ट लगा ही रहे। चिन्ता बनी रहे, इसलिए चिन्ता का त्याग करके परमात्मा पर विश्वास करें। आप सन्तोष रखकर बुद्धि तथा आत्म-बल को बनाये रखना। वर्ष के प्रथम चार मास हानिप्रद होंगे। आप जो काम करें, समझकर करें। दूसरे चार माह सामान्य रहेंगे। उनके बाद के चार मास आपके लिए विशेष लाभ के आयेंगे। इन दिनों में पहले बिगड़े काम भी ठीक बन जायेंगे। दिनों की खराबी के कारण ही हानि होगी, इसलिए प्रगति हेतु सूर्य भगवान पर जल चढ़ावें।

— —

हकीम तमतम हिन्दी प्रश्नावली

१	५९	६	६४	२२	४८	२०	४२
२३	४५	७	५८	४	६१	६०	२
६३	५	४४	१८	४५	२१	८	६२
३	५७	२४	४६	१९	४१	९	५१
१४	५६	२	३५	३०	४०	५३	१५
५०	१२	२७	३३	३४	२८	५२	१०
५५	१३	३६	२६	३९	२९	१६	५४
११	४९	३२	३८	३७	३१	१७	४३

ज्योतिष शास्त्र में हकीम तमतम हिन्दी एक विशेष ही व्यक्ति हुए हैं। उनका कथन है कि अंकों का ज्ञान भी एक सुप्रसिद्ध ज्योतिष शास्त्र है तथा सभी अंकों का अपना-अपना पृथक-पृथक प्रभाव होता है। इसकी विधि जानने का तरीका यह है कि अपने इष्टदेव का स्म:रण करके उपरोक्त अंक चक्र में प्रश्न सोचकर अपनी ऊँगली किसी कोष्टक में रखे। फिर अंक के आगे लिखा फल प्रश्न का उत्तर जावें।

१ सदाचारी बने रहो और सन्तोष व शक्ति के साथ कुछ समय प्रसन्नता में ब्यतीत करो। आपका मनोरथ पूरा हो जायगा।

२ आपकी इच्छा जरूर पूरी हो। यदि यात्रा का विचार है तो इसमें आपकी भलाई ही है। निःसंकोच यात्रा पर चले जाइये।

३ यह कार्य तुम्हारे बस का नहीं है, इसमें डर है। इस इच्छा को त्याग दें अन्यथा हानि है।

४ तुम्हें जिस बात का भय है, वह बात तुम्हारी इच्छा के अनुकूल होगी। निःसंकोच रहें।

५ सवाल करनेवाले की मनोकामना पूरी हो, किन्तु कुछ दिन की देर है। भगवान की कृपा से निराश मत होना।

६ ऐसे कार्य की कामना करना ब्यर्थ है, इसमें कोई लाभ न हो। यह आशा छोड़ें अन्यथा विपत्ति में पड़ जाओगे।

७ यह फल शुभ है, भगवान भली करेगा। कुछ दिनों तक सफलता होगी।

८ सवाल करनेवाला हताश है किन्तु हताश होना ब्यर्थ है। ईश्वर चाहेगा तो कुछ दिनों में मनोकामना पूर्ण होगी। धैर्य रखें।

९ यह ठीक है कि तुमसे द्वेष रखनेवालों की संख्या बहुत है, किन्तु वह तुमको कोई ऐसी हानि नहीं पहुँचा सकते हैं। तुमको उन्नति प्राप्त होगी।

१० आपकी इच्छा श्रेष्ठ है। तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी और आपको खुशी होगी।

११-आपके लिए यह फल शुभ है, तुम सफल होगे निराश मत हो। दान किया करो।

१२-अपनी इस बासना को छोड़ें, आपकी यह इच्छा शुभ नहीं है, यदि न मानें तो हानि उठाओगे।

१३-जिस बात की तू इच्छा कर रहा है, वह थोड़े दिनों में पूरी हो। हृदय में धीरज रखकर बराबर कोशिश करते से बनें।

१४-तेरी अभिलाषा अवश्य होकर रहे। निराशा त्याग खुदा पर भरोसा रख।

१५ इह इच्छा तेरी विपरीत है और तू व्यर्थं ही उतावला बन रहा है। इस इच्छा का त्यागना तेरे लिए उत्तम है।

१६ मन का भेद किसी पर प्रकट मत कर। यदि न माना तब कामना न बनेगी।

१७ तू जिस प्रयत्न में तत्पर है, उसी में लगा रह। परमात्मा नें चाहा तू सफलता पावे।

१८ यह ध्यान रखें कि तुम्हारे बैरी तुम्हारा विरोध करेंगे और तुम्हारे काम को नहीं होंने देंगे। आपको चाहिए कि इस स्थिति में किसी की न मानें।

१९-तेरा प्रयत्न सफल बनें और तेरी मन की अभिलाषा है पूरी हो। अब तेरी इच्छा तभी पूरी होगी जब तू खूब प्रयत्न करे।

२० खुदा तेरा मनोरथ पूरा करे। उसी की शरण जा और तू फिर निराश न हो।

२१ तेरी मनोकामना जरूर पूरी हो। भविष्य में तुझे प्रतिष्ठा और आनन्द मिलेगा।

२२–इस विचार को मन से निकाल दे, यह काम बहुत टेढ़ा है, तेरे किये से नहीं हो सकेगा।

२३–तेनी मन की इच्छा है, वह पूरी हो, किन्तु उसमें तेरी भलाई नहीं है। अब तेरी मर्जी है।

२४–हताश मत हो, सन्तोष का फल मिले। यदि चिन्ता या गुस्सा किया तब नुकसान पड़े।

२५–यह तेरी इच्छानुसार पूरा हो जायगा, बेफिक्र रह और साहस से साथ प्रयत्न कर।

२६–तेरी आमद बढ़ेगी, कठिनाई के दिन शीघ्र बीत जायेंगे। चिन्ता न कर।

२७–यह काम ठीक नहीं है, इससे तेरा स्वास्थ्य खराब होगा। इस विचार को त्याग दे।

२८–तेरी इच्छानुसार तेरा मनोरथ पूरा हो। परमात्मा का धन्यवाद कर।

२९–अपने उन हितैषियों पर भरोसा कर जो तेरे प्रिय मित्र हैं उन्हीं के द्वारा सफलता पावे।

३०–सदाचार और सद्व्यवहार को ही उत्तम जान। बुराई से दूर रह। ऐसा करने में ही तेरी भलाई है।

३१–कुछ दिन अशुभ हैं, इनमें धीरज रख और सावधान रह। खुदा काम साधेगा।

३२–आशा की पूर्ति के लिए जल्दी मत कर, यदि जल्दी करी तब काम बनना कठिन है। धीरज रख, धीरज का फल मीठा है।

३३–किसी प्रकार की शंका अथवा भय को मन में न रख, मन चाहा फल तुझे मिले। चिन्ता त्याग।

३४–तेरी कामना बेकार न हो, वह काम जरूर बन जाये। तरक्की सम्भव है।

३५–यह कामना शुभ नहीं है, इस विचार को मन से निकाल। इसकी अभिलाषा में पछिताओगे।

३६–तुम जो प्रयत्न कर रहे हैं, भगवान ने चाहा सफल होंगे। चिन्ता फिकर मत कर।

३७–तेरा मनोरथ पूरा हो जायगा, किसी की खुशामद मत करना तथा याचना करना व्यर्थ है। अपने इष्टदेव पर यकीन रखना।

३८–इस काम की आशा मत करना, व्यर्थ में ही परेशान होगा, प्रयत्न बेकार है।

३९–यह कामना थोड़े दिनों तक पूरी हो जावे, निराश मत बन। खुदा का ध्यान रख।

४०–यह खयाल अपने मन से निकाल दे। तेरे भाग्य ठीक हैं। ऐसे विचार से अपने मन को दुखित मत कर।

४१–इस काम में कुछ कठिनाइयाँ हैं, किन्तु वह दूर होंगीं और तुझे आनन्द ही आनन्द है।

४२–दुख न कर, मन में डर मत। वहम का कोई इलाज है? भगवान का भरोसा रख, वही तेरी मदद करे और तेरा काम बनावे।

४३–अपने निर्णय पर दृढ़ रह और साहस से काम ले। साहस और दृढ़ता से ही तुझे सब प्रकार की सहायता मिले और तेरा काम बने।

४४–यह दिन शुभ नहीं है, कुछ दिन प्रतीक्षा कर, फिर तेरी इच्छानुसार तेरा काम बने।

४५–अपनी शक्ति के अनुसार कामना करो, इसकी अधिक आशा रखना बेकार है।

४६–इतना दुख करना व्यर्थ है, आप सफल होंगे कोशिश करते रहना।

४७–यह घबराहट और निराशा उचित नहीं है, आपका काम पूरा होगा।

४८–आपकी इच्छा सफल होगी, निश्चय रहकर भजन किया करें।

४९–आपका मनोरथ सिद्ध होगा, फल शुभ है। प्रभु का स्मरण रखना चाहिये।

५०–ऐसे काम में निराशा ही निराशा है, लाभ कुछ नहीं। इस कामना को दिल से दूर करदे, तेरे लिए हानिप्रद है। इस आशा का होना असम्भव है।

५१–ईश्वर की उपासना करना, तुम्हारा सब काम ठीक बन जायगा।

५२–यदि पैसे का व्यय करो तब आपका काम जरूर बन ही जायगा।

५३–आपकी हार्दिक जरूरत पूरी होगी। भगवान पर उम्मीद रखना।

५४–इतनी भय और शंका मत रखो, भगवान से प्रार्थना करो काम बन जायगा।

५५–यह बात आपकी सामर्थ्य की नहीं फिर भी तुम्हें सफलता मिलेगी।

५६ थोड़े दिनों में तेरी मनोकामना पूरी हो जायगी। प्रयत्न करता रह और भगवान पर भरोसा रख।

५७ अपने मन में दृढ़ता रख और किसी बात की चिन्ता न कर कि तेरा काम बन जायेगा।

५८ तेरा प्रयत्न तथा परिश्रम सब ब्यर्थ है। जो तू चाहता है, वह तुझे प्राप्त नहीं होगा।

५९ यह काम ब्यर्थ है, इसके पीछे हताश मत हो। यदि ऐसा करेगा तो पछितायेगा।

६० यह विचार ब्यर्थ है, इस विचार को त्यागदे अन्यथा हानि उठायेगा।

६१ परिश्रम और प्रयत्न कभी ब्यर्थ नहीं जाता। यदि सद्-विचार के साथ प्रयत्न करेगा तो सफल हो जायगा।

६२ ईश्वर तेरी मनोकामना पूरी करेगा, हताश मत हो बल्कि प्रसन्नचित्त रह।

६३ यदि ईश्वर पर भरोसा रखेगा तो तेरी मनोकामना पूरी हो जायगी, बेफिक्र रह।

६४ ये बिचार अपने मन से निकाल दो, भाग्य अच्छा है। ऐसे विचारों से अपने मन को कलुषित मत कर।

——

अमेरिकन भाग्य दर्पण

अर्थात्

प्रश्न चक्रावली फालनामा

यहाँ आगे यह विधि बतलाई गयी है जो यूरोप तथा अमेरिका में अत्यधिक प्रचलित एवं प्रसिद्ध है। इसके देखनें की विधि में दो चक्र दिये गए हैं, जिनमें प्रथम चक्र में दस विलायती फूलों के नाम लिखे हैं और दूसरे चक्र में अन्दर ऊपर दस फूलों के नाम हैं। ये उन्हीं फूलों के नाम हैं जो पहले चक्र में दिये गए हैं। नीचे उनके अंक दिये गए हैं। उन अंकों के सामनें कार्य के नाम अर्थात् प्रश्नों के विषय लिखे हैं। इससे तात्पर्य यह होता है कि जब प्रश्न देखना हो तब रविवार या बृहस्पति न हो। प्रश्न को सोमवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार तथा शनिवार को ही देखें, अन्य दो वारों में नहीं। जब प्रश्न देखें तो पहले सवाल पुछनेवाले तथा सवाल देखनेवाले यानी दोनों को ही पवित्र होकर प्रश्न देखना चाहिये। सवाल पूछनेवाला अपनी ऊँगली पहले फूलोंवाले चक्र में रखे फिर दूसरे चक्र में देखें कि किस फूल पर ऊँगली रखी है। तब जिस विषय का सवाल हो उसी विषय के सामनें उसी फूल के नीचेवाली पंक्ति में लिखें। नम्बर को देखकर फिर उत्तर विधि में उसी नम्बर के आगे लिखे हुए उत्तर को सवालकर्ता के सवाल का उत्तर जानें।

उदाहरण—

जैसे प्रश्न पूछनेवाले ने प्रथम चक्र में रोजवाले कोष्टक में ऊँगली रखी है तो रोज के नीचेवाली लाइन में दूसरे कोष्टक में देखे। मानलो पूछनेवाले का सवाल विजय परदेश से सम्बन्धित है तो फिर रोज के नीचे परदेश के सामने ही देखो ७५ नम्बर लिखा है। इस प्रकार सवाल करनेंवाले के सवाल का उत्तर हुआ। जो व्यक्ति परदेश में है वह आने का विचार करता है किन्तु याद आवें के कारण रुक जाता है।

प्रथम चक्र

*	मैग्नोलिया	लिली
रोज	लोटस	जैस्मिन
नसिसस	डैफोडिल	मेरीगोल्ड
पंडेन्सिस	डेजी	*

प्रश्न सम्बन्धी विषय	चोटस	लीला	रोज	मेरीगोल्ड	गोल्डस्मन	मैग्नीलिया	वाक्समस	इफोर्डिक	पेडिलम्स	डेजी
परदेश गमन	१	३८	७५	११२	१४९	१८६	२२३	२६०	२९७	३३४
परदेशीआना	२	३९	७६	११३	१५०	१८७	२२४	२६१	२९८	३३५
खेती	३	४०	७७	११४	१५१	१८८	२२५	२६२	२९९	३३६
व्यापार	४	४१	७८	११५	१५२	१८९	२२६	२६३	३००	३३७
मृत्यु चिन्ता	५	४२	७९	११६	१५३	१९०	२२७	२६४	३०१	३३८
सहायता	६	४३	८०	११७	१५४	१९१	२२८	२६५	३०२	३३९
निवासपरीक्षा	७	४४	८१	११८	१५५	१९२	२२९	२६६	३०३	३४०
सलाह	८	४५	८२	११९	१५६	१९३	२३०	२६७	३०४	३४१
धन चिन्ता	९	४६	८३	१२०	१५७	१९४	२३१	२६८	३०५	३४२
अभिलाषा	१०	४७	८४	१२१	१५८	१९५	२३२	२६९	३०६	३४३
रोग	११	४८	८५	१२२	१५९	१९६	२३३	२६७	३०७	३४४
तिरस्कार	१२	४९	८६	१२३	१६०	१९७	२३४	२६८	३०८	३४५
मुकद्दमा	१३	५०	८७	१२४	१६१	१९८	२३५	२६६	३०९	३४६
मित्र परीक्षा	१४	५१	८८	१२५	१६२	१९९	२३६	२७३	३१०	३४७

प्रश्न संबंधी विषय	चौटस	चौला	रोज	मुंरंगोलडा	गोस्मिन	मंगतीलला	बर्सरस	ईकफीकिक	पंडिलस	ईजी
युद्ध परीक्षा	१५	५२	८९	१२६	१६३	२००	२३७	२७४	३११	३४८
मिलन	१६	५३	९०	१२७	१६४	२०१	२३८	२७५	३१२	३४९
याचना	१७	५४	९१	१२८	१६५	२०२	२३९	२७६	३१३	३५०
मकान	१८	५५	९२	१२९	१६६	२०३	२४०	२७७	३१४	३५१
नष्ट द्रव्य	१९	५६	९३	१३०	१६७	२०४	२४१	२७८	३१५	३५२
सन्देह	२०	५७	९४	१३१	१६८	२०५	२४२	२७९	३१६	३५३
विश्वास	२१	५८	९५	१३२	१६९	२०६	२४३	२८०	३१७	३५४
भय	२२	५९	९६	१३३	१७०	२०७	२४४	२८१	३१८	३५५
गर्भ परीक्षा	२३	६०	९७	१३४	१७१	२०८	२४५	२८१	३१९	३५६
चिन्ता	२४	६१	९८	१३५	१७२	२०९	२४६	२८३	३२०	३५७
नेक	२५	६२	९९	१३६	१७३	२१०	२४७	२८४	३२१	३५८
विद्या	२६	६३	१००	१३७	१७४	२११	२४८	२८५	३२२	३५९
सफलता	२७	६४	१०१	१३८	१७५	२१२	२४९	२८६	३२३	३६०
विवाह	२८	६५	१०२	१३९	१७६	२११	२५०	२८७	३२४	३६१

प्रश्न संबंधी विधि	लोटस	लीली	रोज	मेरीगोल्ड	जैस्मिन	मेगनोलिया	वर्बिनस	डफोडिल	पेंजिलस	डेजी
प्रेम	२९	६६	१०३	१४०	१७७	२१४	२५१	२८८	३२५	३६२
सन्तान	३०	६७	१०४	१४१	१७८	२१५	२५२	२८९	३२६	३६३
राज्य	३१	६८	१०५	१४२	१७९	२१६	२५३	२९०	३२७	३६४
नौकरी	३२	६९	१०६	१४३	१८०	२१७	२५४	२९१	३२८	३६५
विक्रय	३३	७०	१०७	१४४	१८१	२१८	२५५	२९२	३२९	३६६
खरीद	३४	७१	१०८	१४५	१८२	२१९	२५६	२९३	३३०	३६७
आयु	३५	७१	१०९	१४६	१८३	२२०	२५७	२९४	३३१	३६८
लाटरी भाग्य	३६	७२	११०	१४७	१८४	२२१	२५८	२९५	३३२	३६९
भाग्य	३७	७३	१११	१४८	१८५	२२२	२५९	२९६	३३३	३७०

——

प्रश्न फल

१ हे सवाल करनेवाले ! तुम स्वेच्छा से गमन करो तुम्हारा कार्य पूरा होना है।

२ हे सवाल पूछनेवाले ! तुम जिसके विषय में परदेश से लौटने की भावना चाहते हैं, वह शीघ्र ही लौटकर आने-वाला है।

३ हे प्रश्नकर्त्ता ! अपनी इच्छानुसार खेती करें, अवश्य लाभ होगा।

४ हे सवालकर्ता ! व्यापार करने से तुम्हें लाभ न होगा, इसलिए व्यापार की कामना त्याग दें।

५ हे सवाली ! तुम जिस व्यक्ति के मरने की चिन्ता में हो, वह अभी नहीं मरेगा। परन्तु उसे जो रोग है, वह अभी ठीक नहीं होगा।

६ हे सवाल करनेवाले ! जिस आदमी से तुम सहायता लेना चाहते हो, वह तुम्हें अवश्य देगा।

७ हे सवाल करनेवाले ! यह प्रश्न उत्तम है, अपनी इच्छा-नुसार स्थान पर रहो तो अवश्य लाभ हो।

८ हे सवाल करनेवाले ! वह तुम्हें अच्छी तथा लाभ की सलाह देगा, अतः उसकी सलाह उत्तम है।

९ हे सवाल करनेवाले ! अब तुम्हारे बुरे दिन चले गये हैं, शीघ्र ही कहीं से आपको धन प्राप्त हो।

१० हे सवाल करनेवाले ! आप जो अभिलाषा अपने मन में कर रहे हैं, वह जरूर पूरी होगी।

११ हे सवाल करनेवाले ! आपका रोग जलवायु बदलने पर शीघ्र दूर होगा।

१२ हे सवाल करनेवाले ! जैसा आप उसे समझते हो वह वैसा नहीं है। वह आपका तिरस्कार कदापि नहीं करेगा।

१३ हे सवाल करनेवाले ! तुम्हारी मुकद्दमे में विजय होगी, परन्तु धन और समय दोनों ही लगेगा।

१४ हे सवाल करनेवाले ! शंका मत कर, तेरा मित्र सच्चा है। वह तेरे साथ छल न करेगा।

१५ हे सवाली ! सत्य की विजय होती है, यदि तुम सत्य पर दृढ़ रहो तो निश्चय ही तुम्हारी विजय होगी।

१६ तुम्हारे दिल में जिसके मिलने की चाहना है, वह इस वक्त मिलना कठिन है।

१७ तुम अपने हृदय में किसी से याचना करने का विचार कर रहे हैं। ठीक है जिससे याचना करोगे वह अवश्य बात को पूरी करे।

१८ हे सवाली ! तुम्हारा विचार मकान खरीदने का है। तुम मकान अविलम्ब खरीद लो किन्तु दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में मत लेना।

१९ तुम्हारी कोई वस्तु चोरी हुई है, सो वह अधिक प्रयत्न करने पर अवश्य मिल जायगी। लेनेवाला तुम्हारे मकान के दक्षिण में रहता है।

२० हे सवाली ! वह व्यक्ति सच कहता है, उसके ऊपर सन्देह करना व्यर्थ है।

२१ हे सवाली ! तुम्हें निश्चिन्त रहना चाहिये। जिस आदमी से कहा है या जिसको मालूम है, वह व्यक्ति भेद प्रकट न करेगा।

२२ हे सवाली। आपको जिस बात का डर है, वह बात इस तरह की न होगी, निस्चिन्त रहो।

२३ तुम जिसके गर्भ के विषय में जानना चाहते हो, उसके गर्भ से पुत्र का जन्म होगा।

२४ जो कार्य करना चाहते हैं सो करें, वह सिद्ध होगा। व्यर्थ की चिन्ता न करें।

२५ आप चिन्ता मत करो, बन्दी बन्धन से शीघ्र ही मुक्त हो जायगा।

२६ विद्या भली प्रकार प्राप्त हो।

२७ तुम्हारा समय ठीक है, जो कार्य करोगे उसी में सफलता मिलेगी।

२८ शुभ समाचार सुनने के लिए मिलेगा। तुम्हें विवाह की चर्चा चुभ रही है, ये सम्बन्ध होगा। यदि न हुआ तो पूर्व की दिशा से होगा।

२९ बेफिक्र रहो, किसी तरह का छल कपट न हो जिससे तुम प्रेम करते हो, वह सच्चा प्रेम है।

३० आपको तीन सन्तान की प्राप्ति होगी।

३१ तुम्हें राज्य अधिकार न मिलेगा, परन्तु राज्य में प्रतिष्ठा पाने का योग बनता है।

३२ प्राईवेट नौकरी मिलेगी।

३३ इस समय लाभ है, आप जो चीज बेचना चाहते हैं, उसे बेच दें।

३४ शीघ्र खरीदने में लाभ है, जो चीज खरीदना चाहते हैं उस पर पैसे बढ़ेंगे।

३५ आपकी आयु भगवान की कृपा से लम्बी है अर्थात् दीर्घ है, सुख सम्भव है।

३६ आपकी मनोकामना लाटरी द्वारा धन प्राप्त करने की है, वह पूरी न होगी।

३७ भाग्य अच्छा है, जिस काम में हस्तक्षेप करते हैं, वही कार्य सफलतापूर्वक बन जाता है। कारण है कि आपके हृदय की भावनाएँ उत्तम हैं। जिस दिन बुरी भावना मन में उत्पन्न होने लगेगी उसी दिन से खराब वक्त आ जावे। अर्थात् जो आज भाग्य प्रबल है, वही फिर निर्बल भी हो जायेगा।

३८ वक्त आपका मध्यम है।

३९ उत्तर दिशा से ही काम पूर्ण हो।

४० खेती का काम करना लाभप्रद है, परन्तु आपको शत्रुओं से सावधान रहना चाहिये क्योंकि वे काम में व्यवधान डालेंगे।

४१ जिस मनोकामना पूरी होने के विचार से व्यापार कर रहे हैं, वह पूरी न होगी। लेकिन आपका जीवन यापन ठीक ही होगा।

४२ आपकी मृत्यु रोग से नहीं संग्राम से हो।

४३ सहायता लिना बेकार है, क्योंकि उससे कोई लाभ हासिल न होगा।

४४ वह आपके रहने में हानिप्रद है, अतः वह स्थान आपके रहने लायक नहीं।

४५ ऐसे व्यक्ति से सलाह न लें, वह दुष्ट प्रकृति का [है। लाभ न मिलेगा।

४६ बिना उद्योग के धन प्राप्त न होगा, अतः आपको उद्यम

करना चाहिये

४७ जो कामना है वह दिल से त्याग दें तब आपकी अभिलाषा स्वयं समय आने पर पूरी हो।

४८ रोग शर्तिया दूर होगा, उपचार करें।

४९ दिल से बहम निकालो वह तिरस्कार न करेगा।

५० विजय हो, मुकद्दमा फौरन रद्द होगा।

५१ जैसा समझते हो, वैसा नहीं है। आप मित्रता सोच-विचार कर करें।

५२ वह सबल है, लड़ना ठीक नहीं।

५३ जिससे मिलना चाहते हैं, वह नहीं मिलेगा।

५४ माँगने पर कुछ नहीं मिलेगा, अतः इस विचार को त्यागने में ही भलाई है।

५५ मकान की कामना है तो उत्तर दिशा में खरीदें।

५६ जो वस्तु खोई है, घर में मिल जायगी।

५७ सन्देह उचित है।

५८ सब पर भरोसा करना मूर्खता है।

५९ आप भय त्यागो वह कुछ न बिगाड़ सकेगा।

६० गर्भ से लड़की उत्पन्न हो।

६१ चिन्ता दूर होकर सोचा काम बने।

६२ वह व्यक्ति अभी जेल से नहीं छूटेगा।

६३ विद्या का विचार उत्तम है, लाभ होगा।

६४ परीक्षा में सफलता कठिन है, परन्तु बार-बार कोशिश करने से सफलता मिलेगी।

६५ विवाह न करना ही उत्तम है! शादी से किसी प्रकार का सुख न होगा!

६६ प्रेम करना बेकार है, जिसे चाहते हो, उसके दिल में कोई प्रेम नहीं है!

६७ भाग्यवश सन्तान होना दुर्लभ है, प्रयत्न और शुभ कर्म से फल मिलेगा !

६८ लोक-सेवा करने तथा बुद्धि से काम करने पर ये संभव हो सकता है कि राज्याधिकार प्राप्त हो जाय !

६९ सरकारी नौकरी मिलना कठिन है, प्रयत्न करने पर संभव है प्राईवेट सर्विस मिल जाय !

७० इस समय बेचना ठीक नहीं है, एक माह बाद दाम चढ़ेंगे तब बेचने में लाभ होगा !

७१ आपका मनोरथ सिद्ध हो जायगा, भजन कीजिये।

७२ आपका मनोरथ सिद्ध होगा, कुछ परिश्रम कीजिये।

७३ लाटरी में धन नष्ट करना बुद्धिमानी नहीं है !

७४ अन्तिम बार तुम्हें ही सफलता प्राप्त होगी, धीरज रखो और भगवान का भरोसा करो।

७५ बाहर जाना व्यर्थ है, कोई लाभ न होगा !

७६ तुम्हारा भाग्य उत्तम है, कुछ दिन बाद तुम्हें पूरा आनन्द मिलेगा।

७७ तुम्हारा विचार निरर्थक है, इसे त्याग दीजिये अन्यथा तुम्हें पछताना पड़ेगा।

७८ इतनी जल्दी मत करो, देर अवश्य लगेगी किन्तु काम ठीक बन जायेगा।

७९ इस काम का पूरा होना असम्भव है, इसे करने का विचार निरर्थक है।

८० ऐसे व्यक्ति की सहायता लेना उचित है, वह सत्य प्रिय निष्कपट व्यक्ति है !

८१ जिस स्थान पर आप रहते है, उसको त्याग दें ! वह स्थान आपके लिए हानिकारक है !

८२ जिससे तुम सलाह लेना-देना चाहते हैं वह व्यक्ति उत्तम नहीं है।

८३ तुम्हें धन व्यापार में ही मिलेगा।

८४ तुम बड़े भाग्यशाली हो। तुम्हारी सब मनोकामनाएँ पूरी होंगी।

८५ रोगी ठीक हो जायगा, निश्चिन्त रहें।

८६ कौन कहता है कि वह आपका तिरस्कार करेगा, मिथ्या सोच व्यर्थ है।

८७ तुम्हारा मुकद्दमे में विजय पाना कठिन है।

८८ आप जिसको मित्र समझ रहे हैं, वह वास्तव में आपका शत्रु है।

८९ प्रबल शत्रु से लड़ाई करना ठीक नहीं।

९० जिससे आप मिलना चाहते हैं, वह मिल जायगा और काम भी कर देगा।

९१ आप जिस व्यक्ति से याचना करना चाहते हैं, वह कृपण है कुछ न देगा।

९२ जिस मकान को आप खरीदना चाहते हैं, वह आपको नहीं मिलेगा।

९३ जो चीज आपकी चोरी हुई है, वह किसी और ने नहीं आपके अपनों ने ही उठाई है।

९४ जिस पर तुम सन्देह करते हैं कि वह अविश्वासी है गलत है, वह उत्तम है।

९५ तुम उसकी बातों में मत आना, वह मिल के दगाबाजी करनेवाला है।

९६ तुम जिससे भय खा रहे हैं, वह निःसन्देह आपका घातक शत्रु है, इससे सावधान रहना।

९७ जिस किसी स्त्री के बारे में तुम पूछ रहे हैं, उसके गर्भ से लड़की होगी।

९८ जो बात पूछ रहे हैं, वह पूरी हो।

९९ बन्दी काराबास से छः मास में मुक्त हो।

१०० विद्या नहीं लिखी है।

१०१ जो काम आप करना चाहते हैं, उसमें सफलता नहीं। अन्य काम करें।

१०२ तुम्हारा विवाह न होगा।

१०३ उनसे प्रेम में छल है।

१०४ नसीब में औलाद नहीं है।

१०५ राज्याधिकार की आशा व्यर्थ है।

१०६ आपको नौकरी नहीं मिलेगी, किन्तु व्यापार में लाभ होगा। आपके लिए व्यापार श्रेष्ठ है।

१०७ तुम जिस चीज को बेचना चाहते हैं, उसे अभी बेचदो, बाद में हानि है।

१०८ इस वस्तु की खरीद न करें।

१०९ आपकी आयु ५० साल से कम है।

११० यदि निरन्तर लाटरी लगाते रहे तो आपको सफलता जरूर मिलेगी।

१११ आपका भाग्य आपके कर्मों पर है। आप शुभ कर्म करें तो भाग्यशाली बनेंगे। यदि दुष्कर्म किए तो आपकी भलाई कहाँ ?

११२ यदि पूर्व दिशा में गए तो आपको लाभ होगा।

११३ जिसके सम्बन्ध में तुम पूछ रहे हैं, वह मार्ग में है। एक-दो दिन में आ जायेगा।

११४ न कृषि में आपको अधिक लाभ है और न कृषि में तुम्हें हानि।

११५ आपके लिए व्यापार करना ठीक नहीं है। नौकरी को तलाश करिये। यदि व्यापार करोगे तो अवश्य हानि उठाओगे।

११६ मृत्यु दुर्घटना से होनी है।

११७ आपके दो-एक शुभ चिन्तक साथियों तथा सम्बन्धियों को छोड़कर न तो तुम्हें कोई सहायता देगा और न आपको किसी की सहायता करेंगे तो लाभ होगा। जिसकी आप मदद करोगे वही शत्रु बनें।

११८ आजकल तुम जिस स्थान में रहते हैं; उस स्थान को छोड़ दो। उस स्थान से दक्षिण की दिशा में स्थान की तलाश करें।

११९ ऊपर से तुम्हें जो मित्र दिखाई दे रहा है, सावधान रहें वह वास्तव में शत्रु है। न किसी की सलाह आप मानें और न दें।

१२० आपके भाग्य में धन नहीं हैं, कोई भी छोटी-सी नौकरी करलें।

१२१ जो चाहना तेरे मन में है, वह पूरी न होनी है। उसे मन से निकाल दे।

१२२ रोग असाध्य है, इसका दूर होना कठिन है।

१२३ जैसा तुम समझते हैं, वह वैसा नहीं। बात-बात पर तिरस्कार करेगा।

१२४ मुकद्दमे में हार है।

१२५ मित्र समय पर काम आनेवाला है।

१२६ न जीत है, न हार सन्धि होनी है।

१२७ जिसके पास जा रहे हैं, मिलने से मना करा देगा।
१२८ तुम जिससे लेने की इच्छा कर रहे हैं, वह दानी तो है परन्तु आपको न देगा।
१२९ जिस मकान को आप लेना चाहते हैं, उसे शीघ्र ले लो। उस मकान के ले लेने से आपका भाग्य और भी चमक उठेगा।
१३० खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
१३१ आपका संदेह जिस पर है, वह सज्जन है।
१३२ यह व्यक्ति वास्तव में विश्वसनीय है, प्रत्येक बात गुप्त रखेगा।
१३३ आपको जिस बात का भय है, वह ठीक है। शत्रुओं की चाल से सावधान रहें।
१३४ इस स्त्री के गर्भ में लड़का है।
१३५ जो बात आप सोच रहे हैं, उसे कार्यान्वित करदें, उसमें लाभ है।
१३६ जेली शीघ्र मुक्त होना है।
१३७ आप विद्या तो ठीक प्राप्त करोगे किन्तु इससे लाभ नहीं मिलेगा।
१३८ अपनी सामर्थ्य से बड़ा कार्य न करना, सफलता मिलना कठिन है।
१३९ आपका विवाह जिससे हो रहा है, उससे न निभेगी। शादी न करें तो उत्तम है।
१४० उसका प्रेम बनावटी है, उससे प्रेम मत करना अन्यथा धोखा है।
१४१ आपके भाग्य में सन्तान नहीं लिखी, किसी अन्य के बच्चे को गोद रखलें तो ठीक है।

१४२ स्वप्नों के संसार में रहना बुद्धिमता नहीं। शासन पाने की अभिलाषा छोड़दे।

१४३ किसी की सिफारिश से तुम्हें सरकारी नौकरी अवश्य मिल सकती है।

१४४ जो वस्तु आप बेचना चाहते हैं वह अभी नहीं बिके, यदि बेची तो हानि है।

१४५ अभी किसी चीज की खरीद मत करो अन्यथा पछिताना पड़ेगा।

१४६ शरीर अस्वस्थ रहेगा जबकि आयु दीर्घ है। चिन्ता लगी रहे।

१४७ लाटरी में कुछ-न-कुछ जरूर मिले।

१४८ अपना भाग्य अपने हाथ होता है, चाहे अच्छा बनाओ या बुरा बनाओ। अर्थात् शुभ कर्म करने से ठीक भाग्य बनते हैं और खराब कर्म करने से दूषित नसीब बनता है। अतः शुभ कर्म करिये अवश्य भाग्य ठीक बनेगा। साथ ही लक्ष्मी की भी कृपा बनी रहेगी। इससे यश प्राप्त होकर औलाद सुख मिलेगा।

१४९ अपने स्थान से अपने प्रान्त को छोड़कर पश्चिम दिशा की ओर जाने में लाभ है।

१५० तुम जिसके बारे में सोचते हैं, वह अपनी इच्छा से नहीं आना चाहता।

१५१ तुम्हारी अभिलाषा उत्तम है, खेती करने में आपका लाभ होना है।

१५२ काली वस्तु के व्यापार में लाभ है, और अन्य रंगों के व्यापार में लाभ नहीं।

१५३ मृत्यु की चिन्ता है, वह शीघ्र पूरी होनी है। काया कष्ट समाप्त होगा।

१५४ जिसकी सहायता का विचार है, वह आदमी सज्जन है। निःसंदेह भरोसा करें।

१५५ दूसरी जगह पर हानि है, अतः जहाँ रह रहे हैं वहीं रहने में लाभ है।

१५६ आपको इस आदमी पर भरोसा करना चाहिये। यह आदमी आपका हृदय से शुभचिन्तक है, परन्तु बुद्धिमान नहीं है इसलिये इसकी सलाह मानना ठीक नहीं। यदि इसकी सलाह से काम करेंगे तो परिणाम शुभ नहीं निकल सकता।

१५७ भाग्य ठीक है, शीघ्र ही कहीं से बड़ी मात्रा में धन प्राप्त होने का योग बनता है। यदि अशुभ कार्य किया तब मिलनेवाली सम्पदा नसीब न होगी। इसलिये धन पाना चाहते हैं तो बुरे कर्मों से बचकर सावधानी से रहने में ही भलाई है।

१५८ जो काम करने की कामना मन में है, वह पूरी हो किन्तु कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़े।

१५९ उपचार करावें से रोग ठीक होना है।

१६० यहाँ तिरस्कार नहीं, बहम छोड़ दें।

१६१ न्यायकारी तेरे शत्रु से मिला है।

१६२ तेरा मित्र वास्तव में भला है।

१६३ इससे बैर ठीक नहीं, हार है।

१६४ वह स्वयं प्रतीक्षा में है, जिससे तू मिलना चाहता है।

१६५ माँगना उचित नहीं, मिलेगा तो है नहीं आपकी प्रतिष्ठा कम होगी।

१६६ जिस मकान के लेनें की चाहना है, वह आपको मिलनें वाला नहीं।

१६७ खोई वस्तु के मिलनें की आशा नहीं है।

१६८ सन्देह छोड़ इस व्यक्ति पर भरोसा करो मित्र है।

१६९ विश्वास के योग्य है, हर हालत में लाभ पहुँचायेगा।

१७० आपका भय केवल बहम है।

१७१ पुत्र पैदा होना है।

१७२ यह चिन्ता पूरी न होनी है, अब अन्य उपाय करो तभी लाभ है।

१७३ इस व्यक्ति को मुक्ति मिलनें में अभी देर है, जिसके बारे में लाभ है।

१७४ परीक्षा में जरूर पास होगे।

१७५ जो मन में बिचारा है, उसको पाने के लिए अति परिश्रम करना पड़ेगा। सोचलो बिना मेहनत के सफलता नहीं मिलेगी।

१७६ शादी दक्षिण दिशा में होनी है।

१७७ जितना प्रेम आपका उसमें है, उतना ही उसका प्रेम आप में है।

१७८ दो लड़के तीन लड़की होनी है।

१७९ सन्मार्ग पर रहने से राज्याधिकार जरूर मिलेगा।

१८० नौकरी में लाभ नहीं, व्यापार में लाभ है।

१८१ जिस वस्तु को बेचना चाहते हैं बेच दो कोई हानि नहीं होगी।

१८२ जिस वस्तु को खरीदने का विचार है, उसे दो-तीन माह बाद खरीदना।

१८३ साठ-सत्तर के बीच में आयु है।

१८४ लाटरी में कोई लाभ नहीं है।
१८५ चिन्ता त्याग भाग्य उदय होनेवाला है।
१८६ बाहर जानें का विचार मन से निकालो अन्यथा बाहर मुसीबत है।
१८७ वह शीघ्र आनेंवाला था परन्तु किसी कारण अभी विचार छोड़ दिया है।
१८८ कृषि में हानि है।
१८९ आढ़त करनें में लाभ है।
१९० कष्ट मिटे, मृत्यु का भय नहीं है।
१९१ सहायता व्यर्थ है, कोई लाभ नहीं।
१९२ स्थान मत बदलो।
१९३ इस नेक आदमी से सलाह लेने-देनें में कोई नुकसान न पड़ेगा।
१९४ दैविक सम्पदा मिलेगी।
१९५ कामनां पूरी नहीं होगी।
१९६ खर्च अधिक होनें पर रोग नष्ट होगा।
१९७ तिरस्कार होनें का भ्रम मन से हटाओ।
१९८ मुकद्दमे में जीत है।
१९९ मित्र यह कपटी है, धोखा देगा।
२०० पराजय है इसलिये लड़ाई का विचार कतई छोड़ें।
२०१ जिससे मिलना चाहते हैं, वह नहीं मिलेगा।
२०२ याचना करने में कोई लाभ नहीं वहाँ मत जाना।
२०३ मकान खरीदनें की अभिलाषा पूरी हो जायेगी।
२०४ खोई वस्तु घर में ही है।
२०५ सन्देह ठीक है, सावधान रहें।
२०६ इस पर भूलकर भी भरोसा न करना धोखेबाज है।

२०७ वहमवश आपको भय है, ये व्यर्थ है।
२०८ कन्या होनी है।
२०९ व्यर्थ में फिकर मत करो।
२१० वह जेल से आनेवाला है।
२११ विद्या अधिक प्राप्त होगी।
२१२ इस कार्य में अवश्य सफलता मिलेगी।
२१३ जरूर शादी होगी।
२१४ इसका प्रेम निष्कपट है।
२१५ सन्तान बहुत होगी।
२१६ राज्याधिकार मिलने का योग है।
२१७ भाग्यशाली हैं, जो चाहते हैं वही नौकरी मिलेगी और पदोन्नति भी करोगे।
२१८ इस चीज को बेचने में ही लाभ है।
२१९ यह वस्तु मत खरीदो।
२२० आयु थोड़ी है।
२२१ लाटरी से धन मिलेगा।
२२२ भाग्य अभी ठीक नहीं।
२२३ दो दिन बाद बाहर प्रस्थान करें।
२२४ वह शीघ्र आनेवाला है।
२२५ खेती में लाभ है।
२२६ काली वस्तु के व्यापार में लाभ है।
२२७ रोग न मिटेगा, मृत्यु की सम्भावना है।
२२८ कार्य सिद्ध उसकी मदद से होगा।
२२९ दो माह बाद ये स्थान छोड़ इसके उत्तर में बसो।
२३० सलाह लेने-देने में लाभ है।
२३१ धन नसीब में नहीं है।

२३२ जानते हुए कोशिश मत करो, यह मनोकामना पूरी नहीं होगी ।
२३३ खतरनाक बीमारी है।
२३४ तिरस्कार का बहम लगा है।
२३५ जीत आपकी होगी ।
२३६ मित्र स्वार्थी है, काम निकलते ही न बोलेगा।
२३७ लड़ाई में हानि तथा सुलह में लाभ है।
२३८ बाहर गया है जिससे आप मिलना चाहते हैं।
२३९ जिससे माँगना चाहते हैं वह अवश्य कुछ-न-कुछ देगा। अभी उसके पास चले जाओ।
२४० मकान लेना है तो कुछ दिन बाद उत्तर की ओर लें।
२४१ जो वस्तु खोई है वह एक माह बाद मिलेगी ।
२४२ आपका सन्देह निर्मूल नहीं है, आपका शत्रु पीछा कर रहा है।
२४३ वह आपका हितैषी है, उस पर भरोसा करो।
२४४ बहम को दिल से निकाल दो वह आपका मित्र है। दगा नहीं देगा।
२४५ पुत्र पैदा होगा।
२४६ व्यर्थ के विचारों को मन से निकालकर कार्य करते रहें, सफलता मिलेगी।
२४७ अभी वह जेल से छुटकारा नहीं पायेगा।
२४८ विद्या भली भाँति प्राप्त करोगे, फिर उससे धन व मान भी मिलेगा।
२४९ सफलता मिलना कठिन है।
२५० शादी मत करो अन्यथा विपत्ति में फँसोगे।
२५१ मन से प्रेम की इच्छा को निकालो।

२५२ सन्तान अवश्य होगी परन्तु देरी से और कठिनाई से ही होगी।

२५३ राज्य की प्राप्ति आपको नहीं हो।

२५४ आशा बेकार है, नौकरी नहीं।

२५५ इस चीज को बेकनें में अभी कोई लाभ नहीं।

२५६ अभी इस वस्तु की खरीद मत करो।

२५७ सौ साल की आयु के लक्षण हैं।

२५८ कुछ समय पश्चात् ठीक समय है।

२५९ अभी आपके लिए बाहर जाना ठीक नहीं।

२६० जिसके विषय में जानने के इच्छुक हो, वह परदेश में बीमार है।

२६१ यदि खेती करने की कामना है तो बेशक करें परन्तु कृषि में उत्तम लाभ नहीं।

२६२ यदि ब्यापार की कामना है तो पशुओं का ब्यापार करने में फायदा है।

२६३ तुम जो विचार रहे हैं वह उत्तम है।

२६४ रोग द्वारा मृत्यु मिल सकती है।

२६५ वह आदमी अहसानफरामोश नहीं है, उसकी मदद करना आगे तुम्हारे काम आवे।

२६६ यह सलाह आपके लिए हितकर है।

२६७ मनोकामना हितकर नहीं है।

२६८ उद्योग करने में ही तुम्हें साधारण धन प्राप्त हो।

२६९ इस समय की कामना आपकी अवश्य पूरी हो।

२७० यह रोग असाध्य नहीं, ठीक हो जायेंगे।

२७१ उसके पास जानें में आपका तिरस्कार होना है।

२७२ अदालत का फैसला आपके पक्ष में जावे।

२७३ मित्र आपके सच्चे अर्थों में मित्र है, उन पर अविश्वास मत करो।

२७४ लड़ाई में आप शत्रु पर विजय तो करोगे किन्तु बहुत हानि उठानी पड़ेगी।

२७५ यह खयाल अपने मन से निकाल दे। तेरे भाग्य ठीक हैं। ऐसे विचार से अपने मन को दुखित मत कर।

२७६ इस काममें कुछ कठिनाइयाँ हैं, किन्तु वह दूर होंगीं और तुझे आनन्द ही आनन्द है।

२७७ आप जो मकान खरीदना चाहते हैं, वह सीधा नहीं।

२७८ तेरी कामना बेकार न हो, वह काम जरूर बन जाये। तरक्की सम्भव है।

२७६ सन्देह करना मित्रों पर ठीक नहीं है।

२८० यह कामना शुभ नहीं है, इस विचार को मनसे निकाल। इसकी अभिलाषा में पछिताओगे।

२८१ तुम जो प्रयत्न कर रहे हैं, भगवान ने चाहा सफल होंगे। चिन्ता फिकर मत कर।

२८२ यह दिन शुभ नहीं है, कुछ दिन प्रतीक्षा कर, फिर तेरी इच्छानुसार तेरा काम बने।

२८३ यह कामना थोड़े दिनों तक परी हो जावे, निराश मत बन। खुदा का ध्यान रख।

२८४ जेल से अभी छूटने में देर है।

२८५ इस काम की आशा मत करना, व्यर्थ मेंही परेशान होगा, प्रयत्न बेकार है।

२८६ सफल होना आपके लिए कठिन है।

२८७ आपका विवाह आपके घर से उत्तर की दिशा में होगा।

२८८ तुम जिससे प्रेम करते हो उससे प्रेम की आशा न करें।
२८९ तुम्हारे भाग्य में सन्तान नहीं है।
२९० आपको नौकरी कुछ व्यय करने पर ही मिल गी।
२९१ राज्य की प्राप्ति करना बालकों का खेल नहीं है।
२९२ आप जिस वस्तु को बेचना चाहते हो शीघ्र बेचदो।
२९३ आप अभी मत खरीद करो।
२९४ आपकी आयु बहुत थोड़ी है।
२९५ इस विचार को मन से निकाल दे, ये काम बहुत टेढ़ा है, तेरे किये से नहीं हो सकेगा।
२९६ आपका अब नितारा चमकनेवाला है।
२९७ तेनी मन की इच्छा है, बह पूरी हो, किन्तु उसमें तेरी भलाई नहीं है। अब तेरी मर्जी है।
२९८ हताश मत हो, सन्तोष का फल मिले। यदि चिन्ता या गुस्सा किया तब नुकसान पड़े।
३०० यह तेरी इच्छानुसार पूरा हो जायगा, बेफिक्र रह और साहस से साथ प्रयत्न कर।
३०१ तेरी आमद बढ़ेगी, कठिनाई के दिन शीघ्र बीत जायेंगे। चिन्ता न कर।
३०२ यह काम ठीक नहीं है इससे तेरा स्वास्थ्य खराब होगा। इस विचार को त्याग दे।
३०३ आशा की पूर्ति के लिए जल्दी मत कर, यदि जल्दी करी तब काम बनना कठिन है। धीरज रख, धीरज का फल मीठा है।
३४० किसी प्रकार की शंका अथवा भय को मनमें न रख, मन चाहा फल तुझे मिले। चिन्ता त्याग।
३०४ आपको थोड़ा धन नौकरी में प्राप्त होगा।

३०६ यदि आप किसी का हित चाहते हो तो आपकी कामना अवश्य पूरी हो।

३०७ घर की बीमारी है अब इससे मुक्ति नहीं मिल सकती।

३०८ वह आदमी वैसा नहीं है, जैसा कि आप समझते हो, हर स्थिति में आपका स्वागत वहीं करे।

३०९ मुकद्दमे में आपका व्यय भी अधिक हो और जीत भी न पाओ।

३१० समय पर काम आने वाला मित्र है।

३११ लड़ाई का विचार छोड़ दें, यदि अपनी भलाई चाहें तो संधि करलें।

३१२ आपसे वह मिलना नहीं चाहता तो फिर आप व्यर्थ में क्यों मिलने जाते हैं।

३१३ कृपण तो नहीं है, परन्तु चाहने पर मुश्किल से मिले।

३१४ यदि आप मकान कुछ दिन रुककर लोगे तो फिर सस्ते में मिल सकता है।

३१५ खोई हुई चीज अब नहीं मिल सकती ?

३१६ इस पर सन्देह मत करो, यह पुरुष साधु है।

३१७ विश्वास योग्य नहीं।

३१८ आपका भय करना मिथ्या है, वह तो आपसे शत्रुता कर नहीं रहा है।

३१९ इस स्त्री के गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो।

३२० जो विचार आपका है, वह ठीक है। जो कार्य तुम करना चाहते हो उसे आरम्भ करदो।

३२१ वह थोड़े ही दिनों में जेल से छूटकर आये !

३२२ विद्या आपको बड़े कष्ट से प्राप्त हो।

३२३ आपके भाग्य में इस वर्ष असफलता लिखी है।

३२४ आपकी शादी शीघ्र आनेवाली है, स्त्री आपकी सुशील और सुन्दर आयेगी।

३२५ जिससे तुम प्रेम करते हो, उसके मन में कष्ट है।

३२६ तुम सन्तान का सुख नहीं पाओगे।

३२७ आपको राज्य प्राप्त नहीं होना है।

३२८ आपको सरकारी नौकरी मिलने का योग है।

३२९ जिस वस्तु को बेचना चाहते हो वह अभी नहीं बिके।

३३० जिस चीज का खरीदने का विचार है, इसी समय पर खरीद लो।

३३१ आपकी आयु इतनी लम्बी है कि आप नाती-बेटों का सुख लोगे।

३३२ आप लाटरी से जो धन प्राप्त करना चाहते हैं, वह इच्छा पूरी होना मुश्किल है।

३३३ यदि आप अपना भाग्य बनाना चाहते हो तो कुमार्ग को छोड़ सुमार्ग पर आ जाओ।

३३४ बाहर जाने में आपको कोई लाभ नहीं।

३३५ जिसके बारे में आप पूछ रहे हैं, उसका आना मुश्किल है, वह उलझन में फँसा हुआ है।

३३६ खेती के कार्य में लाभ अवश्य है।

३३७ व्यापार में हानि है, इसलिये व्यापार करने का विचार छोड़दो।

३३८ रोग से मुक्ति पानें के लिए आप जो मृत्यु की इच्छा कर रहे हैं, वह एक मास पश्चात् पूरी हो।

३३९ उससे सहायता मत लेना, ऊपर से वह सहायता करे और अन्दर से काम बिगाड़े।

३४० यह स्थान शीघ्र छोड़दें अन्यथा हानि उठावेंगे।

३४१ उसकी नेक सलाह से काम लोगे तो सफलता अवश्य मिल सकती है।

३४२ धन आपको नहीं मिल सकता।

३४३ आपकी अभिलाषा पूरी हो।

३४४ रोग असाध्य है।

३४५ वह आपका तिरस्कार नहीं करे।

३४६ आपके मुकद्दमे का फैसला अन्त में पंचायत ही करे।

३४७ मित्र सच्चा है।

३४८ युद्ध का विचार मन से निकाल दो।

३४९ उसका आपसे मिलाप अवश्य हो।

३५० मागने पर उसे अवश्य मिले।

३५१ वह मकान ठीक नहीं जिसे आप लेना चाह रहे हैं।

३५२ खोई चीज घर में ही है थोड़े दिन में मिल जायेगी।

३५३ जो सन्देह आपका उस पर है, वह ठीक है।

३५४ किसी पर विश्वास मत करो सब धोखा देनेवाले हैं।

३५५ जब आप जानते हो कि वह आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता फिर उससे भय क्यों खाते हो ?

३५६ इस स्त्री के गर्भ से लड़की होगी।

३५७ जिस बात की तुम चिन्ता कर रहे हैं, वह नहीं होने की।

३५८ जिसके बारे में आप पूछ रहे हैं, उसके छूटने में देर है।

३५९ आपको विद्या प्राप्त नहीं हो।

३६० आपको सफलता अवश्य मिले।

३६१ आपका विवाह नहीं होगा।

३६२ जिससे आप प्रेम करते हैं, उसको भी आपसे प्रेम है।

३६३ आपके सन्तान नहीं होगी।

३६४ राज्याधिकार मिलने की आशा है।

३६५ सरकारी नौकरी नहीं मिले, प्राईवेट नौकरी अवश्य मिल सकती है।

३६६ इस समय बेचने में फायदा रहे।

३६७ शीघ्र बेचदें तो लाभ हो। यदि बेचने में देरी की तब बिकना मुश्किल है, और बिके भी तो नुकसान रहे।

३६८ ५०-६० साल के दरम्यान की उम्र है।

३६९ लाटरी की आशा थोथी है।

३७० बुरा समय निकल गया है, अब शुभ दिन आरम्भ हो गये हैं।

प्रश्नावली चक्र

नीचे दिये गए चक्र में ऊँगली रखें और जिस विषय का प्रश्न हो, उसी विषय के उत्तर में से ऊँगली रखें। वही अंक का हल जानें।

२	६	४
७	५	३
६	१	८

उत्तर—आज का समय कैसा बीते

१ दिन अच्छी तरह व्यतीत हो।

२ चिन्ता और दुख रहे।

३–आज का दिन ठीक बीते।
४–प्रसन्नता प्राप्त हो।
५–दिन ठीक नहीं है।
६–दिन ठीक बीते।
७–दिन उत्तम न गुजरे।
८–दिन बुरा बीते।
९–चिन्ता और दुख हो।

❋ उत्तर—मनोकामना पूर्ण होना ❋

१–मनोरथ पूर्ण हो।
२–काम पूरा न हो।
३–इच्छा व्यर्थ है।
४–आशा छोड़ दें।
५–आशा पूर्ण न हो।
६–अवश्य कामना पूरी हो।
७–मनोकामना पूर्ण होगी।
८–काम देरी से हो।
९–आशा पूरी हो जाये।

❋ उत्तर—परीक्षा विचार ❋

१ सफल हो जाओगे।
२ सफलता प्राप्त हो।
३ सफलता प्रा० होवे की आशा कम है।
४ सफलता प्राप्त करना कठिन है।
५ पास हो जाओगे।
६ सफलता ठीक हो।

७–असफल रहोगे।
८–सफल हो जाओगे।
९–सफल होने की आशा कम है।

उत्तर—प्रेम परीक्षा विचार

१–प्रेम करता है।
२–मुँह देखे का प्रेम है।
३–हार्दिक प्रेम करता है।
४–जरा भी प्रेम नहीं है।
५–दिखावे का प्रेम है।
६–हार्दिक प्रेम नहीं है।
७–प्रेम नहीं करता।
८–प्रेम में स्वार्थ है।
९–हार्दिक प्रेम है।

उत्तर—स्त्री परीक्षा विचार

१–सुन्दर और आज्ञाकारी होगी।
२–पतिव्रता होगी।
३–शक्ल और गुण महान होंगे।
४–काले रंग की होगी।
५–शान्तिमय तथा सुन्दर होगी।
६–बिदुषी होगी।
७–पवित्र आत्मा होगी।
८–सूरत सांवली हो।
९–सुन्दर और योवनमय हो।

उत्तर–खोया माल परीक्षा विचार

१–माल नहीं मिलेगा।
२–देर से मिलेगा।
३–मिलना असम्भव है।
४–मिल जायगा।
५–आशा है।
६–अवश्य मिलेगा।
७–कुछ नहीं मिल सकता।
८–मिलने की आशा नहीं है।

उत्तर–मुकद्दमा परीक्षा विचार

१–जीतना मुश्किल है।
२–कोशिश करो आशा है।
३–अवश्य सफल होगे।
४–हार जाओगे।
५–सफल हो जाओगे।
६–सफलता नहीं होगी।
७–डिग्री हो जायगी।
८–खारिज हो जायगा।
९–आपकी जीत होगी।

उत्तर–नौकरी परीक्षा विचार

१–काम अवश्य मिलेगा।
२–देर सें मिले।
३–व्यय करनें से मिले।

४–किसी की सहायता से मिले ।
५–अभी नहीं मिलेगा ।
६–मिलने की आशा नहीं है ।
७–मुश्किल से मिलेगी ।
८–किसी और के द्वारा मिलेगी।
९–देर से मिलेगी ।

उत्तर—कारोबार विचार

१–कारोबार अच्छा मिलेगा ।
२–शुरू में मध्यम बाद में अच्छा।
३–इस काम में हानि होगी ।
४–किसी के साझे में काम करें ।
५–अलग काम करने से लाभ हो ।
६–जो काम पहला है उसी में लाभ हो ।
७–दूसरा करने में लाभ होगा ।
८–साझे में काम होगा ।
९–किसी दूसरी जगह जाकर लाभ होगा ।

उत्तर—आमदनी विचार फल

१–लाभ बराबर रहे ।
२–लाभ अधिक नहीं हो।
३–अधिक धन नहीं मिल सकता।
४–आशा से अधिक लाभ है ।
५–कम संख्या में ।
६–आशा से बढ़कर लाभ है ।
७–आशा से अधिक लाभ ।
८–काम बराबर रहेगा ।
९–परेशानी अधिक है ।

उत्तर—सुख-आराम विचार

१–आराम मिलेगा ।
१–आराम मिलना है ।
३–आराम देर से मिलेगा ।
४–बृद्धावस्था में आराम है ।
५–जीवन में आराम है ।
६–प्रथम आराम बाद में कष्ट ।
७–शुरू में आराम बाद में कष्ट ।
८–बहुत कष्ट रहेगा ।
९–आराम बहुत मिलेगा ।

उत्तर—कष्ट विचार फल

१–कष्ट से मुक्ति मिलेगी ।
२–अभी कुछ दिन कष्ट रहेगा ।
३–अच्छे दिन आनेवाले हैं ।
४–एक साल बाद अच्छे दिन आयेंगे ।
५–कष्ट के दिन समाप्त हैं ।
६–आनन्द करने के दिन आनेवाले हैं ।
७–दिन ठीक होने में देर है ।
८–जीवन संकटमय बना रहेगा ।
९–पिछली अवस्था ठीक रहे ।

उत्तर—विवाह विचार फल

१–विवाह होगा ।
२–विवाह देर से होगा ।
३–बिवाह होने में सन्देह है ।
४–किसी की सहायता से होगा ।

५–देर से होगा ।
६शीघ्र आनेवाला है।
७–विवाह की आशा कम है ।
८–विवाह देर से होगा ।
९–विवाह की आशा कम है ।

उत्तर सन्तान विचार फल

१–प्रार्थना करें सन्तान होगी ।
२–बड़ों की सेवा करो फल पाओगे ।
३–सन्तान देर से होगी ।
४–अब सन्तान होने की आशा कम है ।
५–सन्तान काफी देर से होगो ।
६–सन्तान की काशा कम है ।
७–औषधि का सेवन करना पड़ेगा ।
८–सन्तान शीघ्र होगी ।
९–सन्तान दूसरी औरत से होगी ।

उत्तर–रोग परीक्षा विचार फल

१–शीघ्र स्वस्थ हो जाओगे ।
२–अभी समय लगेगा ।
३–चिकित्सा में परिवर्तन करदो ।
४–स्वस्थ हो जायगा ।
५–रोग भयंकर है।
६–स्वस्थ हो जायगा ।
७–देर के पश्चात् रोग जायगा ।
८–देवताओं को प्रसन्न करो तब रोग जायेगा ।
९–स्वस्थ होना असम्भव है।

उत्तर—विद्या विचार फल

१–परिश्रम करने से विद्या प्राप्त होगी।
२–भाग्य में बिद्या है।
३–विद्या शीघ्र प्राप्त होगी।
४–विद्या की प्राप्ति के लिए परिश्रम अनिवार्य है।
५–विद्या भाग्य में नहीं है।
६–विदेशी भाषा शीघ्र ग्रहण करोगे।
७–हिन्दी पढ़ना उत्तम रहेगा।
८–विद्या प्राप्त होगी।
९–प्राचीन भाषाओं में विद्या प्राप्त करोगे।

उत्तर—यात्रा विचार फल

१–दक्षिण की यात्रा में लाभ होगा।
२–यात्रा शीघ्र ही होगी।
३–पश्चिम दिशा की यात्रा सफल होगी।
४–यात्रा में लाभ नहीं है।
५–उत्तरी दिशा की यात्रा में लाभ है।
६–यात्रा लम्बी हो।
७–यात्रा लाभदायक हो।
८–यात्रा में लाभ है।
९–यात्रा निष्फल जानी है।

उत्तर— गुमशुदा की तलाश

१–गुम हुआ है जीवित है।
२–गुम हुआ है जोवित नहीं है।
३–अति दुख और कष्ट में है।
४–गिरफ्तार हो गया है।

५–रोगग्रस्त हो गया है।
६–जीवित नहीं है।
७–तीव्र रोग के कारण नहीं आ रहा है।
८–अभी जीवित है।
९–जीवित अब नहीं है।

उत्तर–गर्भ से कन्या होगी या पुत्र

१–पुत्री होनी है।
२–पुत्र होना है।
३–गर्भपात हो जायगा।
४–पुत्र उत्पन्न होगा।
५–पुत्री पैदा होनी है।
६–पुत्र उत्पन्न होना है।
७–पुत्री पैदा होनी है।
८–लड़का पैदा होगा।
९–लड़का उत्पन्न होगा।

उत्तर–स्वप्न विचार फल

१–फल अच्छा ही होगा।
२–फल खराब ही रहेगा।
३–फल उत्तम है।
४–धन मिलना है।
५–किसी सगे-सम्बन्धी से मुलाकात होगी।
६–धन का लाभ होगा।
७–स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा।
८–परेशानी होगी।
९–धन का व्यय होगा।

उत्तर—चोरी विचार फल

१–मिल जायेगी ।
२–मिल जाने की कोई आशा नहीं ।
३ चीज घर में ही है ।
४–चीज घर से बाहर है ।
५–बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी ।
६–कोशिश करो मिल सकती है ।
७–किसी भेदी से पता चल जायेगा ।
८–चोरी किसी स्त्री ने की है ।
९–स्त्री और पुरुष दोनों ने मिलकर की है ।

उत्तर—बन्दी विचार फल

१–शीघ्र मुक्त होगा ।
२–देर बाद मुक्त होगा ।
३–मुक्ति किसी की सहायता से पायेगा ।
४–शीघ्र मुक्त हो जायेगा ।
५–बहुत परिश्रम से मुक्त हो ।
६–मुक्ति पाना कठिन है ।
७–शीघ्र मुक्त हो ।
८–देर लगेगी ।
९–मुक्ति किसी की सहायता से मिलेगी ।

उत्तर–परदेशी विचार फल

१–शीघ्र लौट आयेगा ।
२–अभी आने का विचार नहीं है ।
३ देर बाद आयेगा ।
४ वापस नहीं आयेगा ।

५–वापस आनेवाला ही है।
६–वापस आ रहा है।
७–वापस नहीं आयेगा।
८–संकट में फँसा हुआ है।
९–अस्वस्थ होने के कारण नहीं आ रहा है।

* उत्तर—खोज विचार फल *

१–पूरब या दक्षिण दिशा में चला गया है।
२–उत्तर में गया है।
३–दक्षिण में गया है।
४–पूरब में गया है।
५–पश्चिम दिशा में है देर से आयेगा।
६–पूरब दिशा में गया है, देर से आयेगा।
७–दक्षिण दिशा में देर से आयेगा।
८–पूरब दिशा में शीघ्र आयेगा।
९–दक्षिण में अभी नहीं आयेगा।

* उत्तर – मित्र-मिलाप विचार *

१–मित्र शीघ्र मिलेगा।
२–मित्र विश्वासघाती है।
३–मित्र कुछ बिलम्ब से मिलेगा।
४–मित्र धोखेबाज है।
५–मित्र बड़ा सज्जन और प्रेमी है।
६–मित्र किसी मुसीबत या संकट में पड़ा है।
७–मित्र नेक है, शीघ्र मिलेगा।
८–मित्र स्वार्थी है, अतः कुछ लाभ नहीं।
९–मित्र शत्रु से मेल रखता है।

※ उत्तर—मुकद्दमा विचार फल ※

१—मुकद्दमा केस देरी से चले।
२—मुकद्दमा में विजय होगी।
३—जज ठीक तरह से फैसला नहीं सुनायेगा।
४—कुछ-कुछ ब्यय की आशा है।
५—अधिक रुपया ब्यय करने पर विजय मिले।
६—कष्ट अधिक भुगतना पड़े।
७—पराजय देखनी पड़े।
८—सुलह हो जाये।
९—पंचायत में मिलकर फैसला हो।

※ उत्तर—यात्रा विचार फल ※

१—यात्रा करो फल नहीं होगा।
२—देशाटन में हानि-लाभ बराबर है।
३—भूलकर भी यात्रा मत करो हानि होगी।
४—शुभ दिन देखकर यात्रा करा लाभ होगा।
५—देशाटन में कोई विशेष चमत्कार हो।
६—शकुन विचारकर यात्रा करनें में लाभ होगा।
७—यात्रा में कष्ट उठाना पड़े।
८—यात्रा में आराम मिले।
९—यात्रा सफल तो होगी परन्तु खर्च अधिक होगा।

※ उत्तर—पशु खरीद विचार फल ※

१—पशु से पूर्ण लाभ होगा।
२—पशु से हानि व लाभ बराबर होंगे।
३—पशु मत खरीदो लाभ नहीं।
४—तेरा विचार ठीक नहीं है।

५-लाभ नहीं होगा।
६-आजकल पशु का लेना ठीक नहीं है।
७-पशु संग्रह मत करो।
८-लेना-देना ठीक नहीं लाभ-हानि बराबर है।
९-तेरा विचार विलम्ब से बने।

ॐ उत्तर—लाभ-हानि विचार फल ॐ

१-इस माल से लाभ उत्तम हो।
२-इस माल से लाभ कुछ नहीं होगा।
३-यह काम वहुत घाटे का है।
४-चोरी व हानि होने का भय है।
५-साझीदार व व्यापारी धोखा दे।
६-मूल्य से अधिक धन मिले।
७-माल कुछ देर से लाभकारी हो।
८-खरीदो मत यदि बढ़ा है तो बेचो।
९-माल में अधिक लाभ मिलेगा।

ॐ उत्तर—नोकरी विचार फल ॐ

१-नोकरी जरूर मिलेगी।
२-देर से मिलेगी धीरज रखें।
३-काम नहीं बनेगा सचेत रहें !
४-व्यय करने से लाभ होगा।
५-यहाँ कुछ नहीं बनेगा कोई और फिक्र करो।
६-शत्रु बाधा डालेंगे ग्रह दान करो।
७-किसी की सहायता से काम बन जायगा।
८-इस विचार में अनेक बाधायें पड़ेंगीं।
९-काम सिद्ध न होगा।

❋ उत्तर–विद्या प्राप्ति विचार फल ❋

१–अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२–विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३–मनोकामना पूर्ण होगी।
४–विद्या साधारण सफलता देगी।
५–विद्या ही विशेष लाभदायक होगी।
६–पास होतें में कष्ट होगा।
७–अच्छे दर्जे में उत्तीर्ण होंगे।
८–विद्या में विशेष लाभ न होगा।
९–विद्या लाभकारी नहीं होगी।

❋ उत्तर परदेशी आगमन ❋

१–परदेशी शीघ्र आयेगा।
२–बीमारी से लाचार है।
३–आगे चला आ रहा है।
४–दूर देशान्तरों में बिचर रहा है।
५–मार्ग में ठगा गया है।
६–अभी मन में लौटने का विचार नहीं है।
७–वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८–खर्च से तंग है कैसे आये ?
९–परदेशी पराधीन हो गया है।

❋ उत्तर– शत्रु नाश विचार फल ❋

१–शत्रु दुष्ट है दमन न हो सकेगा।
२–शत्रु पर तुम्हारी विजय होगी।
३–शत्रु द्वारा विशेष हानि होगी।
४–मित्र की सहायता से विजय मिलेगी।

५-शत्रु निर्बल हो गया है डरो मत।
६-विश्वास मत करो उसमें भय है।
७-राजा की सहायता से फल मिलेगा।
८-सुलह हो जायगी।
९-शत्रु के कारण द्रव्य नष्ट हो जायगा।

※ उत्तर चिन्ता विचार फल ※

१-मनोकामना पूरी होगी।
२-काम होने में कुछ देर है।
३-काम का परिणाम अच्छा नहीं है।
४-किसी का भरोसा मत करो।
५-चिन्ता मत करो काम बन जायगा।
६-मन की मन में ही रहेगी।
७-तेरा दुष्ट से पाला पड़ा है।
८-देर से काम बनेगा।
९-चिन्ता सच्ची है किसी से सहायता लो।

※ उत्तर कर्जा विचार फल ※

१-यहाँ कर्जा लेना-देना ठीक है।
२-जैसा प्रेम-भाव है वैसा नहीं रहेगा।
३-देने-लेनें का नतीजा खराब निकलेगा।
४-अन्त में कठिनाई होगी।
५-दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६-यहाँ हानि-लाभ समान होगा।
७-लेने-देते में कोई आपत्ति नहीं है।
८-अन्त में अदालत में जाना होगा।
९-लाभ-हानि बराबर रहेंगे।

❋ उत्तर कृषि विचार फल ❋

१–खेती से लाभ होगा।
२–वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३–खेती को कीड़ों से डर है!
४–मनोकामना पूरी होगी।
५–जितना परिश्रम करेंगे उतना ही फल पाओगे।
६–खेती करो, परन्तु सावधानी से।
७–खेती में ओलों का डर है।
८–वायु द्वारा हानि होगी।
९–खेती में हानि होगी, मत करो।

❋ उत्तर—रोगो का विचार ❋

१–यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२–ग्रह दशा खराब है।
३–यह रोग ईश्वरीय कोप का फल है।
४–चिन्ता न करो आराम होगा।
५–रोगी की आवोहवा में परिवर्तन करो।
६–रोगी को पथ्य से रखो।
७–चिन्ता न करो आराम होगा।
८–आराम हो जायगा परन्तु खर्चा अधिक होगा।
९–होनहार में किसी के बस की बात नहीं।

❋ उत्तर—गर्भ दिशा विचार फल ❋

१–इस गर्भ से सुख की आशा नहीं।
२–पुत्री का जन्म होगा।
३–शुभ लक्षणों वाला पुत्र है।
४–लड़की होगी किन्तु आयु कम होगी।

५–गर्भ अधूरा रहेगा या शीघ्र मृत्यु होगी।
६–पुत्र का जन्म होगा। ७–दीर्घायु पुत्र होगा।
८–जोड़ी कन्या जन्मेगी। ९–लड़का-लड़की जोड़े होंगे।

❋ उत्तर–चोरी गई चीज और चोर ❋

१–वस्तु शीघ्र मिलेगी। २–खर्चा करने पर माल मिलेगा।
३–पता लग जाने पर भी माल नहीं मिलेगा।
४–चोर पक्का है माल नहीं मिलेगा।
५–किसी की सहायता से माल मिलेगा।
६–चोर नें वस्तु दूसरे को दे दी है।
७–माल आधा-आधा हो गया है। ८–माल नहीं मिलेगा।
९–चोर नाबालिग है, माल मिलेगा।

❋ उत्तर–दत्तम-पुत्र का विचार ❋

१–गोद लेने से लाभ रहेगा।
२–यह लड़का वफादार नहीं। ३–लड़का खर्च करायेगा।
४–लड़का ठीक नहीं है। ५–ठीक निभेगी।
६–सावधानी से लेना। ७–बे-मुरब्बत निकलेगा।
८–सुखदायी नहीं है। ९–लड़का ठीक है।

❋ उत्तर–अनाज खरीद विचार ❋

१–अनाज में भारी लाभ होगा। २–लाभ-हानि समान रहें।
३–अनाज में लाभ रहे। ४–खराब होने का भय है।
५–साझे में व्यापार न करें। ६–देर से बिकेगा।
७–अनाज में सवाए हैं। ८–बेचना ठीक है, खर्च मत करो।
९–प्रश्न फल अशुभ है।

* उत्तर–शादी विचार फल *

१–विवाह देरी से होगा।
२–विवाह होगा किन्तु स्त्री अच्छी नहीं होगी।
३–विवाह नहीं होगा। ४–विवाह जरूर होगा।
५–विबाह में बाधाएँ पड़ेंगीं। ६–किसी की खुशामद नहीं।
७–खर्चा करो काम बन जायेगा। ८–थोड़ी देर से होगा।
९-स्त्री गुणशील होगी।

* उत्तर – रोजगार विचार *

१–रोजगार शीघ्र उत्तम होगा।
२–विशेष प्रेम करने से रोजगार बनेंगा।
३–किसी तरह की ठेकेदारी करो।
४–जल, मिट्टी एवं कोयला से लाभ होगा।
५–अब इस व्यापार में हानि होगी।
६–शत्रु बाधा डालेंगे, सावधान रहो।
७–रोजगार ठीक होने में देर है।
८–खोटे ग्रहों की दशा चलती है, अभी चुप रहो।
९–जो बिचारा है, वह अभी पूरा नहीं होगा।

* उत्तर—मन इच्छा विचार *

१–मनोकामना पूरी होगी। २–काम देर में होगा।
३–तुम्हारी लालसा का नतीजा ठीक नहीं है।
४–दस पर भरोसा मत करो। ५–डर मत इच्छा पूरी होगी।
६-मन की मन में ही रह जायगी।
७–तुम्हें बड़े आदमी से वास्ता पड़ गया है।
८-काम स्थायी करो, ठीक रहेगा।
९–डर सही है, फल देर से मिलेगा।

खलज

स्थिति
अती

कूर्म
दया:

लवण
सौवच

गोपी
खलज

स्थिति
अती

श्री टि.एस
श्री एस.
प्रा.प्र. (वि
का.से.)
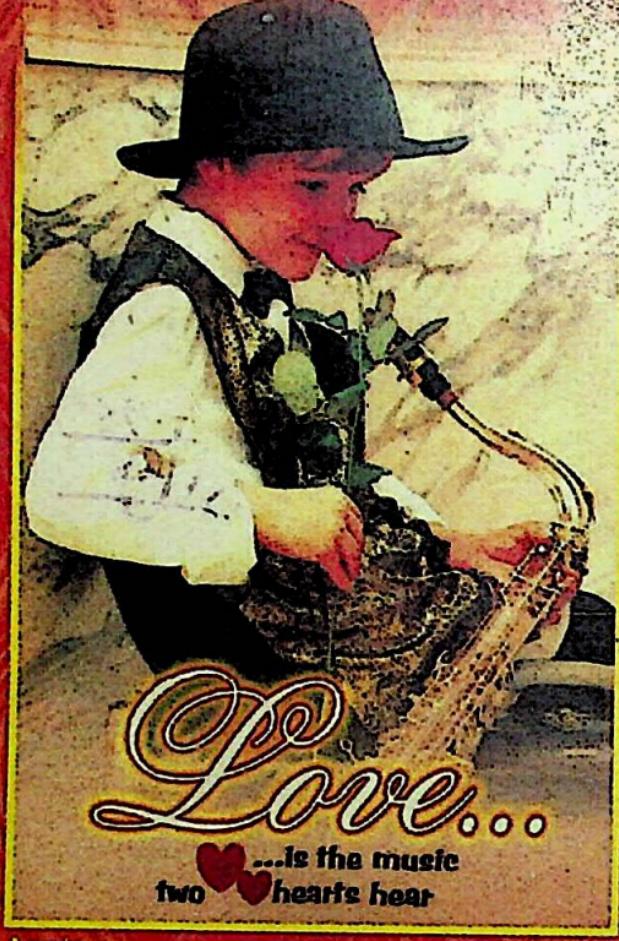
Mr. T.S.
of South
T.C. Sus
Bommaia
Rita Bhat

Love is special

Apple